A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 249 Subject Philosophy

Name of MSS तत्त्वानुसन्धान भाषा

Author

Period 1881 वि० Folios 93 (00a to 00z + 001 to 067)
Various Pagination

Script Sanskrit Source Prithipal Singh

Missing Folios

249

5

तत्त्वानुसन्धान भाषा ॥ प्रकाशानन्देन शिष्यः भगवान् महादेवकृत, जन्माष्टमी, भादों १८८१ वि०

६६ पत्रक ॥ ल० भ० १२ पं० प्र० पृ०

ह० ले०

249

تحودان سلطان کی باشا

1881

دیراگ دن

182

pag 184

6 x 5 1/2



249

कारण बिना जो कार्य भासै तिस के कारण की कल्पना करना ॥
सर्ग कहीये सूक्ष्म भूतों की उत्पत्ति ॥१॥ विसर्ग कहीये स्थूल भूतों की उत्पत्ति ॥
स्थान कहीये जगत का स्थित होणा ॥३॥ पोषण कहीये अवतार धार कर पालना क
रणा ॥४॥ ऊति कहीये शुभाशुभ वासना का फल जैसे अशुभ वासना कर जय वि
जय दैत्य हो गये अरु शुभ कर प्रह्लाद भक्त होत भया ॥५॥ मन्वंतर कहीये
जो जिन शुभाशुभ वासना कर के जन्म जन्मा को प्राप्त होते हैं जीव तिनो के
परिणाम अरु तिन भिन्न मन्वंतरों की कथा ॥ जो मन्वंतर नहीं रहे तो और
किस के बदलता है ॥६॥ ईशानुकथा कहीये जो भोगों विषै लंपट होइ कर
ईश्वर को विसारे सो तिस के मन वास्ते भगवान निमित्त जो राम कृष्णादि
अवतारों की कथा ॥७॥ निरोध कहीये प्रलय ॥ एक दिन दिन प्रलय ब्रह्मा के दिन
पूर्ण भये पृथवी को जल बोड लये ॥ अरु नैमित्त एहलो आपकार भार
सा नलोक भस्म करे ॥ ब्रह्मा की सवा पूरी होइ ॥ अरु आत्यंतिक कहीये जो ब्रह्म
रवेद हलोइ आपको पूर्ण स्वतंत्र रहे ॥ केई विषयो ... होय ... ॥
अरु स्थिति एक तो महावाक्य ते ज्ञान होइ ॥ या मुक्ति सगुण निर्गुण के भेद
कर दो प्रकार सगुण का चार प्रकार की गति निर्गुण ज्ञान मुक्ता ॥९॥ आश्रय
कहीये अध्यात्म आदि तीनों लि सर्व तिन मासे तिन के पान ... आत्म
साक्षी स्वरूप ॥१०॥ सो इन दस पदार्थों का निरूपण पुराणों विषे कीरया
कीया है इन ही के निमित्त जो पुराण तिन सारिखा को कोन है
सम रहै ॥

शुद्ध सत्वप्रधान तें होय माया पात्रे से कहीयत है अज्ञान को
अर्थ यह शुद्ध सतोगुण है और रिविबे तें सर्वविषे प्रति
रिवि बेते चेतनतान मिल कारण है और शुद्ध रज तम
कर युक्त होय सो ई चेतन समवाय अरु ण्पादान
कारण कहीयत हैं ॥ और मलन सत्वप्रधान को अवि
द्या कहीयत है ॥ मलन सत्व कहीये रज तम को का
र्ज जो लय विक्षेप है तिस साथ मिश्रत सतोगुण ति
स विषे प्रतिबिंबित है और तिस के अधीन है सो
जीव है

सो ह्यां ईश्वर के अधीन है ना ते ईश्वर तें

१ श्री॥ केवलव्यतिरेकी कहीये अनिष्टप्रसंग॥ अनिष्टप्रसंग कहीये साध्यके अभाव करहेतुके अभाव की व्याप्तिका ज्ञान॥ यह पर्वत धूमवान नहीं है साध्य का अभाव है॥ अग्नि के अभाव ते एह हेतु के अभाव की व्याप्ति का ज्ञान है॥ अंधेय हव्याप्य के आरोप कर व्यापक का सिद्ध करणा॥ व्याप्य कहीये व्याप्ति का आश्रय॥ व्याप्ति कहीये सहचर्य नेम॥ जैसे कहीये जे अग्नि होता तो धूम होता॥ इस व्याप्ति का आश्रय जो अग्नि अभाव है सो व्याप्य कहीयत है॥ अर व्याप्ति का जो निरूपक होसो कहीये व्यापक॥ का धूम भाव॥ तैसे जे प्रपंच सत्य होता तो अद्वैतश्रुति सायविरोध होता॥ जे परमात्मा जीव ते भिन्न होता तो घटवत् नाश होता॥ जे जीव आनंदस्वरूप न होता तो कोई एक व्यापारवान न होता॥ इति आदिकों व्याप्य के आरोप करके व्यापक का सिद्ध करणा। कहीये जे ईहां धूम होता तो यह पर्वत वन्हिमान होता॥

कि
४
रि

वशीकार वैराग्य तीन प्रकार का है मंद तीव्र तर तीव्र
मंद वैरागी के संन्यास का अधिकार नहीं॥ अर तीव्र
वैरागी के कुटीचर बहूदक दो संन्यास होते है॥ अर
तरतीव्र के हंस परमहंस संन्यास होता है॥ हंस कहीये
जिसनें तत्पद शोधन नहीं कीया॥ इसी तें तिसके ब्रह्म
लोकादिकवि बैसगुण स्वरूप की प्राप्ति है॥ अर परमहंस
द्विविध है एक विवदिषा दूसर विद्वत्रूप सो विव
दिषा हू द्विविध है एक आश्रमरूप दूसर त्यागरूप
आश्रम कहीये जिसनें त्वंपद शोधन कीया परंतु तत्
पद नहीं शोध्या इसी तें तिसके ब्रह्मलोक द्वारा तें
मुक्ति की प्राप्ति है॥ अर त्याग संन्यासी प्रारब्ध के
अभाव तें इहांहीं विचार के बल कर मुक्त होता है
॥ अर तत्त्वज्ञान को पाय कर चित्त की विश्रांति ना
के हृदय निमित्त अर जीवन्मुक्ति पायबे निमित्त जो संन्या
स है सो विद्वत्संन्यास है॥ इहां कोई कहे के वशी
कार वैरागी के तो ब्रह्मलोकादि का त्याग है हंस संन्या
सी को कैसे ब्रह्मलोक का इच्छा होता है कहीयत है॥
जो वशीकार वैरागी के त्याग की इच्छा है॥ अर

हे सो सन्यासी के साधन को अपक्ष मार्ते अर
उपासना का प्राप्ति अवकाश को कहते हैं

१

संशयस्वरूपमाह ॥ एकधर्मी विषे भासमान वि
रुद्ध जो नाना कोटि का ज्ञान है सो संशय है। अर्थ यह
एक जो सीपी है तिस विषे जो एह सीपी है वा रुपा
है वा भोडर है इत्यादि ॥१ अथवा के इक ऐसे क
हते हैं ॥ एक धर्मी विषे जो सो धर्मी का आकार अर
तिसतें भिन्न जो आकार है धर्म है
ये जो दोनो धर्म हैं तिन्हों के भे
द का अवगाही जो ज्ञान है तिन सापे विरुद्ध जो
नाना ज्ञान है सो संशय है। अर्थ यह एक धर्मी
कहीये जैसे एक गंगा तिस विषे तिस का आ
कार जो यमुना सरस्वती अर तिस तें भिन्न
कहीये मेरु स्थल नदी इन दोनो धर्मों के भेद का
अवगाही कहीये जो एह गंगा है वा सरस्वती है वा
यमना है वा मेरुस्थल नदी है एह जो ज्ञान है तिन का
अवरोधी जो नाना कोटि को ज्ञान है सो कहीये संशय

ॐगणेशरूपगुरवेनमः॥ अथतत्त्वानुसंधानभा
षालिख्यते॥ प्रथममंगलाचर्नं॥ ब्रह्माहंयत्प्रसा
देनमयिविश्वंप्रकल्पितं॥ श्रीमत्स्वयंप्रकाशंस्वप्रत्यो का
मिजगतांगुरुम् १ देहोनाहंश्रोत्रवागादिकानि
नाहंबुद्धिर्नाहमध्यासमूलं नाहंब्रह्मानंदरूपश्चि
दात्मामायासाक्षीकृष्णएवाहमस्मि॥२॥ इन
मंगलाचर्नतेंपाछेंयहजनावेहै जोमहावा
क्यार्थज्ञानकेअधीनहै अरवाक्यार्थज्ञानप
दार्थज्ञानकेअधीनहै तिसातेंतत्पदकेअर्थ
कोनिरूपणकरेहैं सोतत्पदार्थकोलक्षण
द्विविधहै एकतटस्थलक्षणहै एकस्वरूप

लक्षणहै सृष्टिस्थितिलयकेकारणताकरकें
तटस्थलक्षणहै तहांश्रुतिप्रमाणहै यतोवाइ
मानिभूतानि इत्यादि तैसेभगवानसूत्रका
रहूंकहेहैं जन्माद्यस्ययतः सत्यहैज्ञानहै
अनंतहै इत्यादिस्वरूपलक्षणकहाहै त
हांश्रुतिहै सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदो
ब्रह्मेतिव्यजानात् इत्यादि तहांस्वरूप
कहेहैं आनंदादयःप्रधानस्येति पुनःत
त्वपदार्थद्विविधहै वाच्यलक्ष्यभेदकरकें मा
योपहितचैतन्यतत्पदकोवाच्यार्थकहीए
अरुमायाविनिर्मुक्तचैतन्यतत्पदकोल

तटस्थलक्षणवाचक सविकल्पवाक्यहै॥ स्वरूपस्थलक्षण
वाचकनिर्विकल्पवाक्यहै॥ वाच्यलक्ष्यनिरूपकतत्त्वमस्यादि
महावाक्यहै॥

रूपार्थकहीए कौनहैमायासोसुए जैसेशुक्त्या
दिकरविषेरजतादिककल्पितहै तैसेचेतन
रविषेअचेतनकल्पितहै तहांश्रुतीप्रमाणहै
इदंसर्वंयदयमात्मा आत्मैवेदंसर्वं ब्रह्मैवे
दंसर्वं पुरुषएवेदंविश्वं सर्वंखल्विदंब्रह्म
वासुदेवःसर्वमिति नारायणःसर्वमिदंपु
राणः इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवाक्यशास्त्रोंकरकै
अचेतनकोचेतनबिनाअभावहीप्रतिपादि
तहै तातेंचेतनविषेअचेतनकल्पनमायाही
है ननुपूर्वोक्तश्रुतिप्रमाणकरकैचेतनअचे
तनएकरूपकिंउनहोंहि सि॰ चेतनअचे
तनकेअभेदकाअयोगहै काहेतेंजोचेत

विद्यक्ता

न नित्यशुद्धबुद्धमुक्तपरमानंद अनंत अद्वैत ब्रह्म
है अरु अचेतन अज्ञानादि जड जात है सो अज्ञा
न त्रिगुणात्मक है सत असत ते अनिर्वचनीय है
अरु भावरूप है अरु ज्ञान ते निवर्त्य है अहं ब्रह्म
न जानामि इन अनुभव ते अज्ञान का स्वरूप जा
न्या जाता है तहां प्रमाण हैं देवात्मशक्तिं स्वगु
णैर्निगूढां इत्यादि श्रुतिः स्मृतिश्च अज्ञाने
नावृतं ज्ञानं तेन मुह्यंति जंतवः ज्ञानेन तु त
दज्ञानं येषां नाशितमात्मनः इति सो अज्ञा
न माया अविद्या भेद ते द्विविध है सो कहे हैं
शुद्धसत्वप्रधानरूपा माया ऐसे कहीए है अ
रु मलिनसत्वप्रधानरूपा अविद्या ऐसे कहीए है

तहांश्रुतिप्रमाणहै जीवेशावाभासेनकरोति मायाविद्याचस्वयमेवभवतीति अथवाअज्ञानकीशक्तिद्विविधहै ज्ञानशक्तिअरक्रियाशक्ति रजोतमोतेंरहितजोसतोगुणहै सोज्ञानशक्तिहै तहांप्रमाणहै सत्वात्संजायतेज्ञानमितिस्मृतिः अरक्रियाशक्तिद्विविधहै एकआवर्णदूसराविक्षेपतिनकास्वरूपकहीयतहैर जोसतोरहितकेवलतमोगुणआवर्णशक्तिकहीए तहांप्रमाणहै वृह्मंतमआवर्णात्मकत्वादिति सोआवर्णशक्तिआत्मानहींअरनभासेहै इनविवहारकाकारणहै तहांप्रमाणहै नाभातिनास्तिकूटस्थइति इस

विवहारकोसाधकआवर्णशक्तिहै अरसतोत
मोतेंरहितकेवलरजोगुणविक्षेपशक्तिहै तहं
स्मृतिप्रमाणहै रजसोलोभएवचेति लोभा
दिकोंकेविक्षेपकत्वप्रसिद्धहीहै सोविक्षेपशक्ति
आकाशादिकप्रपंचकेउत्पत्तकाकारणहै तहं
प्रमाणहै विक्षेपशक्तिर्लिंगादिब्रह्मांडांतंजग
त्सृजेतइति तैसेदिखावेंहैं पूर्वोक्तअज्ञानजो
हैआवर्णशक्तिप्रधानहूयाअविद्याऐसेकहीय
तहै अरविक्षेपशक्तिप्रधानहूयामायाऐसेक
हीयतहै इनअभिप्रायसंयुक्तस्मृतिप्रमाणहै
तरत्यविद्यांविततांहृदियस्मिन्निवेशिते यो
गीमायाममेयायतस्मैविद्यात्मनेनमः ऐसो

अविद्याअरमायाकोस्वरूपदेषबेयोगयहैजै
सेमायोपहितचैतन्यकेंईश्वरजगतकारण
अंतर्यामीकहतेहैं सोईहीतत्पदकावाच्या
र्यहै अरअविद्याउपहितचैतन्यकोजीव
आगयहैंसेवकहतेहैं तहांप्रमाणहै त्रिगुण
त्मकजोमायाहैसोद्विविधहै सतोगुणकीशु
धताकवेंमायाहै अरसतोगुणकीअशुधता
करवेंअविद्याहै चैतन्यतिसमायाकोवशकरवें
सर्वज्ञईश्वरहोवेहै अरअविद्यावशहूयाजी
वहोवेहै तिसअविद्याकीविचित्रतातेंअ
नेकप्रकारहोवेहै तहांश्रुतिप्रमाणहै अस्मा

5 ज

न्मायीसृं ति विश्वमेन न्नस्मिंश्चान्य: मायया संनिरुद्धः मा
यां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरं इत्यादि कश्रुती
पूर्वोक्त श्रुति अध्ययन निमित्त हैं सबै योग्य हैं और इस
कारक कैं कूं जनावें है जैसे एक दे वद त्तरूकि
या निमित्त वड़ा करवें पारक पाचक ऐसें कही
यत है तैसें एक हीं अज्ञान विक्षेप आवर्ण श
क्ति निमित्त भेद करवें माया अरु अविद्या कही
यत है तिसकौं दिखावें हैं अविद्या प्रतिविंबे
त चैतन्य जीव है मायोपरहित विंब चैतन्य ई
श्वर है सो आनासहरी है इसीतें उपमा है सूर्य ज
लादिकौं जैसें तहा प्रमाण है जैसें जो तस्वरूप

उपहित प्राज्ञ है अज्ञान विषे हूं उपहित प्राज्ञ है अप्रपाप्तिरवि
प्राप्तिरव्या है॥

सूर्य एक बहुत जलों विषे आवहु या उपाधि कर
के नाना रूप होवे है ऐसे अजन्मा आत्मा हू देहे
पाधि करके नाना रूप होवे है तहां और हू प्रमाण
है एक एव हि भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थितः
एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचंद्रवत् इत्या
दिक श्रुतिस्मृतीं के विद्यमान हुवते इन पक्ष
विषे जीव एक ही है तिस पक्ष विषे अंतहकरण
विशिष्ट प्रमाता कल्पित है और केई इक नाना
अज्ञानकों अंगीकार करके विन जैसे अज्ञान सम
ह समष्टि कहे है तत उपहित चैतन्यकों ईश्व
र कहे है और व्यष्टि जैसे एक एक अज्ञान व्यष्टि
कहे है और तत उपहित चैतन्यकों प्राज्ञ ऐसे

"चैतन्य

कहेहैं अरऔरजेहैंकारणीभूतअज्ञानउपहि
तचैतन्यकोंईश्वरकहेहैं अरअंतष्करणउपहि
"तकोंजीव तहांप्रमाणहै कार्योपाधिरयंजीवः
कारणोपाधिरीश्वर इसवचनतेंऐसेकहेहैं स
र्वपक्षोंकवैंमायोपहितचैतन्यकोंईश्वरकहेहैं
सोईश्वरज्ञानशक्तिउपहितस्वरूपकरकैंजग
तकानिमित्तकारणहै अरविक्षेपादिशक्तिमा
नअज्ञानउपहितस्वरूपकरकैंजगतकाउपा
दानकारणहै ऊर्णनाभिवत् तहांश्रुतिप्रमा
णहै यथोर्णनाभिसृजतेगृह्णतेचेत्यादिश्रु
तिः औरप्रमाण यःसर्वज्ञःससर्ववित् सहिस
र्वस्यकर्त्ता इति ऐसेपूर्वोक्तईश्वरतेंप्राकारा

"ईश्वरशुद्धसत्वोपाधिकरनिमित्तकारणहैं अररजोगुणविक्षेप
शक्तिकरसत्त्वनाकरअरतमआवरणकरस्थूलताकरउपादा
नकारणहै ७

"पुनः चैतन्यकोकार्यकारणोपाधिकरजीवेश्वर
रूपकरकहीयतहै

उत्पत्ति होती है आकाशतें वायु वायुतें अग्नि अ-
ग्नितें जल जलतें पृथ्वी तहां प्रमाण और श्रुतिभी
है तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः
इत्यादि और मायाके त्रिगुणात्मकत्वतें तत्का-
र्य्यहूं त्रिगुणात्मक पंचीकृत सूक्ष्म भूत वर-
ननकतेहैं इन सूक्ष्म भूतोंतें स्थूल भूत और सू-
क्ष्म शरीर सप्तदशादि लिंगात्मक उत्पत्ति होते
है सो सप्तदशाँ कहते हैं पंच ज्ञानेंद्रिय पंच क- ५८
र्मेंद्रिय पंच प्राण मन और बुद्धि सो दिखावें हैं
आकाशादिक पंच भूतोंके भिन्न सात्विक अंशो-
तें ज्ञानेंद्रिय उत्पत्ति होवें हैं आकाशतें श्रोत्र
वायुतें त्वचा तेजतें चक्षु जलतें रसन पृथ्वी

तें घ्राण श्रोत्रमाकाशमित्यादि श्रुतिः आका
शादिकों के मिलितसात्विकअंसतें अंतःकर
ण उत्पत्ति होता है सो अंतःकरण संकल्प विकल्प
निश्चय अभिमान अनुसंधान रूपवृत्ति भेदतें
चतुर्विध है मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तं चेति च
तुर्विधी संकल्पात्मकं मनो रूपं बुद्धिर्निश्चयरू
पणी अभिमानात्मकस्त्वहंकारः प्रकी
र्तितः अनुसंधानरूपं च चित्तमित्यभिधी
यते ऐसे वार्तिकजी के वचनतें अरपूर्व
क आकाशादिकों के मिलित रजसअंसतें क
र्मेंद्रिय उत्पत्ति होते हैं आकाशतें वाक वायुतें
हस्त अग्नितें पाद जलतें उपस्थ पृथ्वीतें पायु

अरु आकाशादिकों के मिलित राजसअंशतें
प्राण उत्पत्ति होते हैं सो वृत्तिभेद तें पंचविध हैं
आकूगमनवान नासाग्रवर्ती प्राण है अधोग
मनवान गुदावर्ती अपान है चहूं ओर गमन
वान सर्वशरीरवर्ती व्यान है ऊर्ध्वगमनवान
कंठवर्ती उदान है खानपान अन्नादि
कुके समानकर्ता सर्वशरीरवर्ती समान है
वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ ए पंच कर्मेंद्रिय
हैं आकाशादिकों के राजस अंशों तें क्रम करकें
इनकी उत्पत्ति है अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञा
नमय आनंदमय यह पंचकोश तीन शरीरों के
अंतर्गत हैं आगे कहता जो स्थूलशरीर है

सोअन्नमयकोशहै अरस्थूलशरीर जोहै
सोकोशत्रयात्मक है सोजनावेहै कर्मेंद्रियों
सहितप्राण प्राणमयकोशहै ज्ञानेंद्रयोंसहि
तमन मनोमयकोशहै अरज्ञानेंद्रयोंसहित
जोबुद्धिहै सोविज्ञानमयकोशहै सोकर्त्तत्वउ
पाधसंयुक्तहै तहांश्रुतिप्रमाणहै विज्ञानं
यज्ञं तनुते कर्माणि तनुतेपि च इति अरअं
तहकरणकीसत्ववृत्तिद्विविधहै निश्चयवृ
त्ति अरसुखाकारवृत्ति निश्चयवृत्तिसंयुक्तअं
तष्करणकोंबुद्धिकहीएहै अरसुखाकारयुक्त
अंतष्करणकोंभोक्तृत्वउपाधहै तहांश्रुतिहै
तिसआनंदमयकाप्रियशिरहै मोदद्दक्षिणपक्ष

दमय कोश को शास्त्र एक ... करते हैं सो अज्ञान स्वरूप क
...ते है आनंदमय कोश को

है प्रमोद उत्तर यह है आनंद शरीर है ब्रह्मपु
च्छ है इति यह कारण पर्यंत आनंदमय कोश है
अरु केई एक अज्ञान को आनंदमय कोश कह
ते हैं अरु यह लिंग शरीर सप्तदश आत्मक द्विवि
ध है समष्टि व्यष्टि भेद तें सो कहे हैं अपंचीकृत
पंच महाभूतों का कार्य सप्तदश आत्मक सो समष्टि
कहीयत है एतत् उपहित चैतन्य को हि
रण्यगर्भ अरु प्राण अरु सूत्रात्मा कहीयत है
काहे तें ज्ञानशक्ति अरु क्रियाशक्ति रूप जो अंत
ःकरण इंद्रिय हैं तद्वान जो लिंग शरीर है
तिस करि उपहित तें अरु व्यापक तें हिरण्य

लिंकहीयेपदार्थ।।कहीजैनावै

गजीदिसंत्तिकहै अथवापूर्वोक्तअपंचीकृततिभू
तोंतैसर्वव्यापकलिंगशरीरपृथकहीउत्पन्नहै
सोहूसमष्टजैसेकहायतहै समष्टकहीएजाल्या
दिकोंजैसेसर्वव्यक्तोंविषेअनस्यूत तहांकहा
है तेभ्यःसंनवत्सूत्रंलिंगंसर्वात्मकंमहदि
ति अर्थयहअपंचीकृतिपंचभूतोंतेउत्पत्तिहै
तहेसूत्रसोलिंगशरीरकहीएहेपर्मात्माकेज
नावणेतें अरसर्वव्यापकहै अरमहतत्वरूप
है अरकेईएकबनवनलिंगशरीरसमूहकों
समष्टजैसेकहतहैं अरएकएकप्रतिलिंग
शरीरकोंव्यष्टजैसेकहतहैं व्याष्टकहीए व्यक्त
जैसेपथक [illegible] तनउपहितचैतन्यकों तेजस

ऐसे कहीयत है ते जो मय अंतःकरण उपा
धि तें सामान्य विशेष चेतन अरु जात व्यक्ति व
त् समष्टि व्यष्टि के तादात्म भाव को ग्रहण है
इसी तें तद उपहित तैजस अरु स्व आत्मा
के हू तादात्म्य है इन सूक्ष्म शरीर अवि
द्या काम कर्म सहित कों पुर्यष्टक ऐसे कह
त है ज्ञानेंद्रिय पंच १ कर्मेंद्रिय पंच २ अंतःकरण च
तुष्टय ३ प्राणादि पंच ४ सूक्ष्म भूत पंच ५ अ
विद्या ६ काम ७ कर्म ८ इति अष्टौ तहां का
र्य अविद्या रूप व्याप्ते सो चतुर्विध है अनित्य
विषे नित्य बुधि अशुच विषे शुचि बुधि दु
सुख विषे सुख बुधि अनात्म विषे आत्म बु

धि इति तहांकहाहै योगशास्त्रविषेसत्र अ
नित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्यशुचिसु
खात्माख्यातिरविद्येति अर्थयह अनि
त्यब्रह्मलोकादिसंसारफलविषेनित्यबु
द्धि। अरअशुचि स्त्रशरीपुत्रभार्यादिश
रीरेंविषेशुचिबुधि २ दुःखोंविषेअरदुः
खसाधनोंविषेसुखअरसुखसाधनबु
द्धि ३ अरअनात्मदेहेंद्रियादिकोंविषेअ
हंऐसेआत्मबुधि ४ यहचतुर्विधअवि
द्याहै अरकामकहीएराग अरकर्मत्रि
विधहै संचितआगामी २ प्रारब्ध ३ सो
कहीएहैं अपणाकीयाजोकर्महैसोफल

कोंनदेयककैंअदृष्टरूपककेंजोस्थितहे
सोसंचितकर्महैं जैसेपूर्वकरचेसंध्यावंद
नअग्निहोत्रादि अरइनशरीरविषेक्रिय
माणजोकर्महै सोआगामीकहीयतहे अर
वर्तमानशरीरकूआरंभकजोकर्महै सो
प्रारब्धकहीयतहे सोइनतीनकर्मोंविषे
संचितअरक्रियमाणकर्मोंकाफलभोगक
कैंअथवाविरोधीकर्मोंतरककैंअथवाज्ञा
नककैंविनाशहे अरप्रारब्धकाएकभो
गकरनाशहे बहुतकहिलेकरक्याहे जोप्रा
रब्धबिनांअविद्यादिकपंचक्लेशोंकाहूंत
तज्ञानहीकरनाशहे सोपंचक्लेशादिषा

१०

वैतेहैं अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभि
निवेश ५ कार्यकारण हि विधा अविद्या
तो आगै निरूपणकरीहै और अहंकार
वृ जो सूक्ष्मावस्था है सो अस्मिता है इस
हीकौं महत्तत्व और सामान्य अहंकार कह
तेहैं २ और राग कहीए काम ३ द्वेष कहीए
क्रोध ४ और अंगीकार करयुं के त्यागकान
सहितता सो कहीए अभिनिवेश ५ इन पं
च क्लेशों का ब्रह्मसाक्षात्कार तें विनाश है
तहां श्रुति ही प्रमाण है ज्ञात्वा देवं मुच्यते
सर्वपाशैरिति पाशैः पंचक्लेशैरित्यर्थः २
हो प्रसंगीक वार्ता ऐसे ही सत्कार्यवादी

सांख्य कहैं महत्तत्व अरु वेदांत मत कहैं
सामान्य अहंकार ५॥

उत्पत्तिविरूपवर्णकरी अबस्थूलभूतोंकी
उत्पत्तिकोंकहतेहैं स्थूलभूतपंचीकृतहैं
सोपंचीकृतिदिखावेहैं पूर्वोक्तआकाशादिकों
केजोतामसीअंशहै सोएकएककाअंशकोंदुयदु
यभागकरीयेसें फेरएकएकअर्धकोंचतु
र्भागकरकेंस्वांशकोंत्यागकेपरांशोंसायुयो
जनपंचीकृतिहै तहांपंचांशोगमनतिकवैंत्त
दन्तिकर्णकहतेहैं पृथिवीमलमांसमनहै
जलमूत्रलोहितप्राणहै तेजअस्थिमज्जा
वाकहै इत्यजोत्रिविधिनहै सोएकएकभूत
केत्रिभागतेंहोवेहै इतित्रिवृत्तिकरणं श्रु
तिः इत्यत्रिवृत्तिकरणंश्रुतिरूपंचीकरणके

११ जनावेहै तातें पंचीकर्णकूं प्रमाणहै ननु
जेपंचीकर्णकरिकैं सर्व भूतोंकेएकभीभावहै
तदएह पृथिवीहै एह जलहै इत्यादिक नै
दथैं सेहोवैहै सि० सूत्रकर्ता इस शंकाकों
दूरकरतोहै सूत्रम् वैशेष्यात्तद्वादस्तद्वा
दः इति अर्थयह स्वांसकीअधिकतातें सो
कथनहै सोकथनहै अबपंचीकर्णकाअयो
जनकहैहैं जैसेपंचीकर्णकेहुएतें आकाश
विशेषशब्दहै वायुविशेषशब्दस्पर्शहैं तेजविशेष
शब्दस्पर्शरूपहैं जलविशेषशब्दस्पर्शरूपरसहैं
पृथिवीविशेषशब्दस्पर्शरूपरसगंधहैं तैसेपं
चीकृतिपृथिव्यादिकतें ब्रह्मांडउत्पत्तिहै

अरतिसब्रह्मांडकेअंतर्वर्तीचतुर्दशलोक
हैं अरब्रह्मांडतेंमनुअरशतरूपाहोतभए
अरब्रह्मांडकेअंतर्वर्तीपृथिवीतेंऔषधी बूटी
औषधीतेंअन्न अरपितामाताकेभुक्तअ
न्नकरणामतेंवीर्य रुतुधारास्थूलशरी
रउत्पत्तिहोतभया सोस्थूलशरीर
चतुर्विधिहै जराउज अंडज स्वेदजउ
द्भिज मनुष्यादिशरीरजाराउजहै पक्षिना
गादिअंडजहै यूकामशकादिशरीरस्वेद
जहै तृणवल्लीआदिशरीरउद्भिजहै कल्या
होयास्थूलशरीरप्रकारांतरकरकैद्विविध
है समष्टव्यष्टभेदतें सोदिखावैहै पंचीकृत
पंचमहाभूत अरतत्कार्यब्रह्मांड अरतदं

तरवरती कार्य यह सर्व समष्टि कहीयत है
अथवा व्यक्तों विषे जातवत सर्व व्यष्टों विषै
अनस्यूत पंचीकृत तिन्नूतों का कार्य ब्रह्मांडरू
प व्यापक समष्टि है अथवा वन जैसे स्थूलशा
रीर समूह समष्टि कहीए है अर समष्टि उप
हित चैतन्य को विराट वैश्वानर ऐसे कही
यत है विविध राजमानत्व तें विराट अर
सर्वनराभिमानत्व तें वैश्वानर कहते है
अर प्रत्ये क स्थूल शरीर जो है गवादिव्य
ष्टवत भिन्नरूप या व्यष्टि ऐसे कहते हैं अर
व्यष्टि उपहित चैतन्य को विश्व ऐसे कहते हैं
काहेतें जो सूक्ष्म शरीर को नत्याग के स्थूल शरी
र विषे प्रवेश है इन समष्टि व्यष्टि दोनों के सा

मान्यविशेषवतत्तादात्म्यकोप्राप्तहै इसी
तें इनसमष्टिव्यष्टिकरउपहितजोविश्ववै
श्वानरहैतिनोंकेभी तादात्म्यहै सोदिखा
वैहैं एकहीजीवजाग्रतअवस्थाविषेस्थूल
सूक्ष्मकारणविद्याअभिमानीहूयाविश्व।
ऐसेकहीयतहै सोईहीस्वप्नअवस्थाविषे
सूक्ष्मशरीरकारणविद्याअभिमानीहू
यातैजसऐसेकहीयतहै सोईहीसुषुप्ति।
विषेकारणअविद्याअभिमानीहूयाप्राज्ञ।
ऐसेकहीयतहै सोईहीशरीरत्रयकेअभि
मानरहितहूयाशुद्धपरमात्माहोतहै।
तिसहीअभिमानीजीवकीपंचअवस्थाहै
जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिमूर्छामरणचेइते सोअव
१ २ ३ ४ ५

१२ दिखावै हैं दिगादिकों के अधिष्ठाता जो देवता हैं तिनों करिकै अनुग्रहीत जो इंद्रिये हैं तिनों करिकै शब्दादिक विषयों का अनुभवरूपा जो अवस्था है सो जाग्रतअवस्था है जाग्रत विषे जो ग्रहीता जीव है तिनों के शांतसंते अरु इंद्रियों को शांत संते जाग्रत अनुभव तें उत्पत्ति जो संस्कार है तिस तें उत्पन्न जो विषयों का जानणा है सो स्वप्नावस्था है अरु जाग्रत स्वप्न उनय विषे जो ग्रहीता जीव है तिनों के शांत संते अरु स्थूल सूक्ष्म शरीर के अभिमान की निवृत्ति द्वारा विशेष विज्ञान की शांत रूपा जो बुद्धि की कारणरूप करिकै अवस्थित है सो सुषुप्ति अवस्था है अरु सु

अरप्रहारादिजनितविषादिकवैविद्रोवस्ता
नकी जोग्रांतअवस्थाहै सोमूर्छीवस्थाहै
सोकहाहै मुग्धोर्धसंपत्तिः परिशेषादितिग्र
र्थयह मूढजोमूर्छितहै सोअर्धज्ञानसंयुक्तहै
परश्रोयकहीयेभेदतै भेदकहीयेभिन्नलक्षण॥
जोत्तेंमूर्छाकोजाग्रतसुषुप्तमरणतैंभिन्नलक्षणहै
॥सोदिखावेहै जोग्रतविषेविशेषज्ञानहोवेहै अर
मूर्छाविषेनहो तातैजाग्रततेंमूर्छाभिन्नहै अ
रसुषुप्तविषे प्रसन्नवदनअरनिष्कंपतनहुए
है अरमूर्छाविषेकरालवदनअरकंपादिकहै
तातैसुषुप्तेजोमूर्छाभिन्नहै अरमरणतेंज्ञ
मूर्छाभिन्नहै काहेतैंमरणतेंपाछेंउत्थानका

४६

अस्तावहै अरमूर्छातें उत्थान होता है तातें म
रणतें हूं मूर्छा भिन्न है अरविशेषज्ञानके अ
भावतें स्वप्नतें हूं मूर्छा भिन्न है इति अरइ
न शरीरके भोगदाता जो कर्म हैं तिनोंकी शां
तिकरिकै द्विविधदेहाभिमानकी निवृत्तिकरिकै
इंद्रियसमूहकी जो संकोचावस्था है सो मर
णावस्था है अरकेई एक इस मरणावस्थाको
जाग्रतादिअवस्थायोंविषेअंतर्भूतिकहतेहैं
अरतहांभी जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिविषे इन मरण
अवस्थाको अंतर्भाव नाही है काहेतें जातैं जा
ग्रतस्वप्नविषै देहानुसंधान होवै है अरमरण
विषे नहीं तातें जाग्रतस्वप्नतें भिन्न है अरसुषु

वृत्तेंकेरउत्थानहोवेहै अरमरणअवस्थाउत्था
नतेंरहितहै तातेंसुषुप्तेकूं मरणावस्थाभि
न्नहै इसीतेंशेषजोमूर्छावस्थाहै तिसकेअंत
र्भावहै अरईहांकोईकहै जोमूर्छातेंउत्थानहो
वेहै अरमरणतेंउत्थाननहींहोता तातेंभि
न्नहैं तहांयहउत्तरकहतेहैं जोमूर्छातेंक
र्मोंकीदोषतातेंउत्थानहोताहै अरकर्मोंकी
निर्दोषतातेंमरणहोवेहै तातेंमरणाव
स्थामूर्छाकेअंतर्गतहै इत्यर्थः ईहांइहजना
वहै जिनोंनेंअवस्थाचारग्रहणकीयाहैं तिनों
नेंमूर्छाविषेकर्मोंकीनिर्दोषताग्रहणकरीहै
अरजिनोंपंचअवस्थाकहीहैं तिनोंमूर्छा
विषेकर्मोंकीदोषताग्रहणकरीहै यहअर्थहै

ईहांश्रुतिप्रमाणप्रसिद्धहैं एकहीपर्मात्मा
समष्टस्थूलसूक्ष्मशरीरअरततकारणजो
मायाहै तिसकरिकैउपहितहूयावैश्वानरशब्दसैं
सेकहीयतहै अहमेववैश्वानरोस्मीत्येत
उपासनयातत्प्राप्तिफलंभवति अर्थयह
मैंहींवैश्वानरहूं इनउपासनाकरिकैब्रह्म
फलनप्राप्तहोताहै अरवैश्वानरअधिकरण
विषेसूत्रकारअरभाष्यकारोंनेश्रुत्यर्थ
केतैंसेप्रतिपादनतेंपर्मात्माहींवैश्वानर
है अरसोईपर्मात्मासमष्टसूक्ष्मशरीर अर
ततकारणमायोपहितहूया हिरन्यगर्भ
४॥ कहीयतहै एततउपासनाकरिकेब्रह्मकीप्र
४॥ प्राप्तहोतीहै अंतरउपपत्ति इनसूत्रकेअधिक

अप्रमय्य है सो इनउपासनाकाफलतैंहोय

तैं विषे सूत्रकार अरु भाष्यकारोंनें अरु उप
कोशल विद्या विषे तैसे प्रतिपादन तें परमात्मा
ही हिरण्यगर्भ है सोई ही परमात्मा केवल मा
या उपाधी हूया ईश्वर ऐसे कहीयत है तिन
की उपासना करकै ब्रह्मप्राप्ति फल होता है य
र सर्वत्र प्रसिद्ध उपदेश तें शांडिल्य विद्या विषे
दहर उत्तरेभ्यः इन सूत्र करकै दहर विद्या वि
षे सूत्रकार भाष्यकारोंनें यथोक्त ईश्वर उ
पासना करकै ब्रह्मप्राप्ति प्रतिपादन तें परमा
त्मा ही ईश्वर है जैसे जैसे उपासता है सोई सो
ई होता है इह श्रुति प्रमाण है अरु भावना की
मंदता तें तिस तिस की तारतम्यता करकै सा
र्ष्टि सारूप्य सालोक्य फल होते हैं तहां श्रु
नु ऐसे साधनसंपंन है अरु विचार को सामर्थ्य है सो ब्रह्म कौ पावत

तथमालहै साम्नासायुज्यलोकतांजयतीनि
यांकोअर्थ सामकहीए सामवेदकर्के प्रति
पादितधर्मोंकर्के चारमुक्तीकोपावताहै अर
जेसाधनचतुष्टयसंपन्नहैं अरविचारवि
बेसमर्थहैं मंदबुधीतिनोंके गुरमुखतें
ब्रह्मनिश्चयकर्कै सर्वउपाधिविनिर्मुक्तिस
तचितआनंदब्रह्मएब्रह्मऐसेहेंअपरंचि ऐसी
निर्गुनउपासनाकर्कै इनशरीरविषेजर
वलोंरहेए अथवामरणावस्थाविषे अथ
वाब्रह्मलोकविषेउत्पत्ति ब्रह्मसाक्षात
कारकर्कैतिलजावहीपिलहोवेहै कुरुते
न्यायकेवाक्यतें सोवाक्यजनावेहैं ऊमि

से ते नेवाद्र देशेन परं पुरुषमभिध्यायीत म उ
वतस्माज्जीवनात्मना सरं पुरिशयं पुरुषमाद व
ते उभिस्मात्मानं युंजीत उभिस्सेवं ध्यायन्नय
घात्मानमिसाद्दिष्कृतिभ्य: याको ऽर्थ उच्य
ते एको हृदर करन परम पुरुष कों ध्यान करे
हे सो हूं जीव अमृत तें पर ते परे सर्वव्यापी पु
रुष को देखता हे उंकार स्वरूप ऽआत्मा ही कों
जुडे हे उं ऽगइ से ध्यान करता हृस्याय पापर्वि
करके ऽआत्मा को पावे हे तैं से स्मृति विवेद्रू
कहा है उमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्माम
नुस्मरन् यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति

पर्यंगतत्ति । अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वा
न्येभ्यः उपासते तेपिचातितरंत्येवमृ
त्युंश्रुतिपरायणाः ऐसेतत्वदर्शमायो
पहितब्रह्मकोतटस्थलक्षणजोजगत
कोजन्मादिकारणत्वहै सोनिरूपित
है इसकोअध्यारोपऐसेकहेहैं अबइस
काअपवादकहेहैं अपवादकहीअ
धिष्ठानविषैभ्रांतकरकैप्रतीतकेतिस
तेंव्यतरेककरकैंजोअभावनिश्चैहै जै
सेशुक्त्यादिकविषैभ्रांतकरकैप्रतीत
जोरजतादिहै तिसकेशुक्तिव्यतिरि
क्तयहरजतनहीं किंतुशुक्तिहीहै यह

अपवाद / बाध / [illegible] / [illegible]

कहै बाधस्वरूपविलापनकौं कहे हैं सो बाधतो
नप्रकारकौं है एक अपवाद है एक यौक्तिक है ए
कप्रकार है तहां अपवाद कहे हैं अध्यातमवादे
रो नेति नेति नेह नानास्ति किंचन इत्यादिक श्रुती
ते शुक्तिव्यतिरेक करके प्रपंचके अभावकौ निरू
प । अरु यौक्तिक बाध दिखावे हैं मतकाव्यतिरे
क करके घटके अभावके निरूपणजनतें स
र्वकौ कारणतारूपमूलव्यतिरेक करके सक
लप्रपंचके अभावकौं निरूपकरके दृरूप
के मिथ्यातिनिरूपकरके ब्रह्म[illegible]कौं निरू
परूप अबाधसमक बाधकौं दिखावे [illegible]

तत्वमसिइत्यादिकमहावाक्यकरिकैजन्य
ज्ञानात्मसाक्षात्कारकरिकैंअज्ञानअरअज्ञा।
नकेकार्यकौजोनिवृत्तिहैसोप्रत्ययबाधहै।
अबयौगिकबाधकेक्रमकौंदिखावेहैं
स्थूलप्रपंचसर्वकौंस्थूलभूतौंविषेलय
करैइसयुक्तिकरिकैजोस्थूलभूतौंबिनां
स्थूलप्रपंचनहीं यहनिश्चयकरिकैतापाछैं
स्थूलभूतौंकौंअरसमष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरी
रौंकौंसूक्ष्मभूतौंविषेलयकरै तहांसू
क्ष्मभूतोंविषैक्रमलयकौंक्रमकहैहैं पृथ्वीकौं
जलविषैलयकरै जलकौंअग्निविषैअग्नि
कौंवायुविषैवायुअकाशविषैअकाशकौंअ

कौं

पंचीकरणं = पंचीकरणं

ज्ञानविषै अरु अज्ञानकौं चिन्मात्रविषेल
यकरै तहां स्मृतिकूं कहैहैं जगत्प्रतिष्ठा
देवर्षे पृथिव्यप्सु प्रलीयते ज्योतिष्यापः प्रली
यंते ज्योतिर्वायौ प्रलीयते १ वायुश्च लीयते
व्योम्नि तच्चाव्यक्ते प्रलीयते अव्यक्तं पुरुषे ब्र
ह्मन्निष्कले संप्रलीयते २ अरु रहैकह
है अकारं पुरुषं विश्वमुकारे प्रविलापयेत्
उकारं तैजसं सूक्ष्मं मकारे प्रविलापयेत्
१ मकारं कारणं प्राज्ञं चिदात्मनि विलापये
दिति इन अध्यारोप अरु अपवादौंकरि तत्वं
पदार्थका सोधन सिध होवैहै सो दिखावैहैं

मायाआदिसमष्टिअरतदोपहितचैतन्य
अरइनदोनोंकाआधारअरइनोंकरिअ
नुपहितजोंअखंडचैतन्यतप्तलोहपिंड
जैसेअभेदएकताकरिकैनासमानतत्पद
कावाच्यार्थहोवैहै अरतिनिनकरिअखंडचैतन्य
तत्पदकालक्षार्थहोवैहै अरअविद्यादि
कव्यष्टिअरएततउपहितचैतन्यअर
इनदोनोंकाआधारअनुपहितप्रत्यकचै
तन्ययहतीनोंतप्तलोहपिंडजैसेअभेद
एकत्वकरिकैनासमानत्वंपदकावाच्या
र्थहोवैहै अरइनतेंभिन्नप्रत्यकचैतन्य
त्वंपदकालक्षार्थहोवैहै अरइनदोनोंका

ह्यार्थकोंलेकरकेसंबंधत्रयसहिततत
मस्यादिकवाकालसूलाणकेंगबदा
र्थकोजनावेहे [illegible] नोंपदोंकाजोस
मानाधिकरन्य सोसंबंधत्रयकहीय
तहै सामानाधिकरन्यकहाए जेदप्रव
र्तकउपाधिकाएकार्थविषेजवर्तहोय
बो जैसेसोयंदेवदत्तईहांततकालव
शिष्टदेवदत्तवाचकसःशब्दका अर
एततत्कालविशिष्टदेवदत्तवाचकअ
यंशब्दकाएकदेवदत्तपिंडविषेजोप्र
वर्तहैसोसमानाधिकरन्यहे अरहस
सेपदार्थोंकाविशेषणविशेष्यभाव जैं

सो तहांहीं संज्ञा स्वार्थ किवै जो तत्काल वि
शिष्ट है अरु अयं शब्दार्थ किवै जो एतत
काल विशिष्ट है इन दोनों का अन्योन्य
भेद निवृत्त ताकर वैं विशेषण विशे
ष्यभाव है अरु तीसरा लक्ष्यलक्षण है
सो दिखावे है सोऽयं अयं सः ऐसे पदों
का अथवा अर्थों का अविरुद्ध देवदत्त
के पिंड कै वाच्यार्थ साथ लक्ष्यलक्षण
भाव है जैसे सोऽयं इत्यादिक वाक्य विशे
षण है अरु अयं शब्द का अथवा इन दो
नों पदों के अर्थों का अविरोधी देवदत्त
के पिंड कै वाच्यार्थ साथ लक्ष्यलक्षण

नावहे तथातत्वमस्यादिवाक्योंविषेतत्वंप
दोंकापरोक्षत्वअपरोक्षत्वविशिष्टजीवई
श्वरवाचिकपदोंकाअखंडचैतन्यविषेता
त्पर्यवृत्तिकैजोवर्त्तीहैसोसमानाधिकर
ण्यहै तैसेतत्वंपदोंकाअर्थरूपजीव
ईश्वरकाअन्योन्यभेदवृत्तिनिवर्त्तताक
केतत्वमसित्वंतदसिइतिविशेषण
विशेष्यभाववकहीयतहै अरतत्वंप
दोंकाअथवातिनोंकेअर्थोंकावाक्या
र्थसाथअविरुद्धअखंडचैतन्यककेै
विरुधांशाकेपरित्यागकर्केलक्षण
लक्षणभाववकहीयतहै सोकहाहै साम्ना

र।

नाधिकरणं च विशेषणविशेष्यता ल

क्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रत्यगात्मना

मिति अर्थ समानाधिकरन्य जो है वि

शेषणविशेष्यता जो है लक्षलक्षणभाव

जो है पद अर्थ प्रत्यगात्मा यों के है अर्थ

यह जो पदों के समानाधिकरन्य है अ

र अर्थों के विशेषणविशेष्यता है अर

प्रत्यगात्मा के लक्षलक्षणभाव है इस

अभिप्राय कर वेवाक्य के भेद कहा

है श्री आचार्यचरणों ने तत्त्वमस्यादि

वाक्यं च तादात्म्यप्रतिपादने तस्यौ

तत्त्वंपदार्थौ हि वुपादाय प्रवर्त्तते इति

यांके अर्थ तत्त्वमस्यादिक वाक्य जो है ता

अर्थ यह जो तादात्म्य के प्रतिपादन विषे असं
दात्म्य प्रतिपादन विषे लक्षरूप लखै
पदों के अर्थ रूप को ग्रहण करै प्रवृत्ति
होता है काहे तें जातें संसर्ग के अथवा
विशिष्ट के अथवा विशिष्टता के अत्यहा
दि विरोधक वै तत्त्वमस्यादि वाक्यों कर
वै प्रतिपादन की अयोग्यता है

१३॥ अखंडत्वं नाम॥ अखंडत्व कहीये
सजाती विजाती स्वगत भेदशून्यता अब इन
कों दिखावै हैं॥ ब्रह्मव्यतिरिक्त सर्वप्रपंच
के कल्पितत्व करि मिथ्यात्वतें विजातीभे
दशून्यता है॥ जीवात्मा अरु परमात्माके अ
त्यंत ऐक्यतें सजातीभेदशून्यता है॥ एकर
सत्वतें स्वगतभेदशून्यता है॥ अथवा त्रिवि
धपरिछेदकुं कैं जो शून्यत्व है सो अखंड
त्व कहीयत है॥ सो दिखावै हैं विभुत्वतें देश
परिछेदशून्यत्व है॥ नित्यत्वतें कालपरिछेद

१

श्यत्व है सर्वात्मकत्व तैं वस्तु परिच्छेद शून्यत्व है। तहां प्रमाण है॥ वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वादिमादि अर्थ यह मैं इन आत्मा को विभुत्व तैं अजर पुरातन सर्वात्मा सर्वगत जानौ हूं॥ अथ वा अपर्यायवाची जो अनेक शब्द है तिनौ कै वाच्यार्थ का विषय संतिजो स्वरूप वस्तु परिछिन्न भावतें रहित तैं सो अखंड कहीयत है॥ तहां प्रमाण है॥ अखंड विषै चतुर जे पुरुष है वे विशेषण विशेष्य भाव कै रहित जे अपर्याय अनेक शब्दा कै

प्रकार श्रीजनक अखंड को पावत भये। १
इसप्रकार तत्वमस्यादिवाक्योंकै जन्य जो
अपरोक्ष ज्ञान है तिसतै अज्ञान की नि
वृत्ति अरु आनंद की प्राप्ति होवै है॥ सो वा
क्यवृत्ति विवेक होवै है॥ प्रत्यग्बोधो य आभा
ति सो द्वयानंदलक्षणः अद्वयानंदरूपश्च
प्रत्यग्बोधैकलक्षणः १ इत्थमन्योन्यतादात्म्य
प्रतिपत्तिर्यदा भवेत् अब्रह्मत्वं त्वमर्थस्य
व्यावर्तेत तदैव हि २ तदर्थस्य च पारोक्ष्यं
यद्येवं किं ततः शृणु पूर्णानंदैकरूपेण प्र
त्यग्बोधोवतिष्ठते ३ ॥ यांको अर्थ प्रत्यग
तिए

बोधजोभासेहैसोअद्वैयानंदलक्षणहै
अरजोअद्वैयानंदस्वरूपहैसोप्रत्यगबोध
कलक्षणहै।।इसप्रकारएकऔरके
तादात्म्यकीज्ञानजबहोवैहैतबत्वंपदके
अर्थकोअब्रह्मत्वदूरहोवैहै।।अरततंप
केअर्थकोपरोक्षत्वदूरहोवैहै।।नतुऐ
सेजबहोयातइतिनतेक्याहोयातहोउ
तरसुरगो।।पूर्णानंदएकरूपककैप्रत्यग
बोधहीस्फुरतहोवैहै।।इसप्रकारअन्योन्य
तादात्म्यकीसम्यकज्ञानहोवैहै।।सैब्रह्म

तें ब्रह्मही मैं हूं इस प्रकार अखंडाकार
वृत्त्युदे होवे है॥ इति मनन करि अज्ञान नि
वृत्त हुये ब्रह्मत्व अपरोक्षत्वादिकों
के निवर्त्त भये तें प्रत्यगात्मा की अखंड अ
नंत स्वस्वरूप के विषे स्थित होवे है एह इन
श्लोकों का तात्पर्य है॥ इति श्रवणमननादि अभिव्यंजक के
भेदः॥ विषय अविछिन्न चेतन्य को जनावने
हारी जो अंतस्करण अज्ञान को परणाम भेद है
सो वृत्ति कहीयत है॥ अभिव्यंजक कहीये ऐसो
इस व्यवहार जनक अथवा आवर्ण निवर्तक

३ केवलअजोव्हसव्यवहारजनककह्यातें अनुमि
त्यादिरत्तीयांविषेअव्याप्तिआवेहै इसीतें अ
सत्तापाहिंके आवरणनिवर्त्तककह्याहै॥ अरपर
णामकहीयेउपादानकेसमानसतायुक्तअ
न्यथाहोवण॥ अरविवर्तकहीयेउपादानतें
विषमसत्तायुक्तअन्यथाहोवण॥ अज्ञान
अरअंतस्करणकीअपेक्षाकरकेवृत्तके
प्रणामकह्याहै॥ अरचैतन्यकीअपेक्षाक
रकेवृत्तकेविवर्तकह्याहै॥ इसातेंनहींसिद्धां
तविषेविरोध॥ ईहांअंतस्करणकेपरिणामत्व

विषेप्रवृत्तियुक्तप्रमाणहै॥सोमनकोकरतमया
इत्यादिकप्रवृत्तिकरकेअंतःकरणकेउव्याकार्यत्व
करकेजोसावयवपनावहैतिसकरकेपरिणा
मपनावबुनेहै॥सोवृत्तिप्रमाअरअप्रमाकेभेद
तेद्विविधहै॥प्रमाकोलक्षणयहबोधकर्केप्र
काशितजोवृत्तिहैअथवावृत्तिविषैप्रकाशित प्रतिबिंबित
जोबोधहैसोकहीयेप्रमा॥सोप्रमादोप्रकारकी
है॥एकईश्वराश्रयहै॥दूसरीजीवाश्रयहै॥
तहांईश्वराश्रयप्रमाकहीयेहै॥ईक्षणहैअ
परपर्यायजिसका॥ऐसीजोअदृष्टविषया
कारमायावृत्तिहैतिसविषैप्रतिबिंबनाकेको
प्राप्तजोचितहैसोईश्वराश्रयप्रमाकहीयेहै

तहां अनुतिप्रमाण है।। सो दे स्वप्न या मे बहुत तो
वो उत्पत्ति होवो इत्यादि।। अरु दूसरी जीवाश्र
य यह।। अनधिगति अरु अबाधित जो विषय
है तदाकार जो अंतःकरण की वृत्ति है तिस विषे
प्रतिबिंब भाव कू प्राप्त जो चित है सो जीवाश्र
य प्रमा कहीये है।। आत्मा के ब्रह्म की एकता
अप्राप्त है अरु अबाधित है इसी ते प्रमा के
अनधिगति अरु अबाधित विशेषण कहा
है।। सो असंभवत्व लक्षण नही।। अरु प्रपंच के सं
स्कार दशा विषे अबाधित भाव ते तिस प्रमा
विषे अव्याप्ति लक्षण कू नही।। तिस प्रमा का
करण प्रमाण है सो जीवाश्रय प्रमा हि विधये
का यह प्रयोजन है एक अनधिगति कहतो कके
भों न हो न होवे तो अतिव्याप्ति होती अरु एक अबाधि

एकपारमार्थकी दूसरी व्यवहारकी ॥ तहां तत्
त्वमस्यादिवाक्यजन्या पारमार्थकी प्रमा कही
ये ॥ सो पूर्व निरूपित है ॥ अरु आगे भी कहेंगे ॥ अ
रु पंचप्रमा व्यवहारकी है ॥ सो षट्विध है ॥ प्र
त्यक्ष १ अनुमिति २ उपमिति ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५
अभाव ६ इन भेदतें ॥ तहां विषयचेतन्य अरु प्रमा
णचेतन्यका एकत्व होवण सो प्रत्यक्षप्रमा है ॥
तिसको दिखावे हैं ॥ एक ही चेतन्य उपाधि भेदतें
प्रमातृप्रमाणप्रमेयफल भेदतें चतुर्विध है ॥
तहां अंतःकरणविशिष्ट चेतन्य प्रमातृचेतन्य क
हीये ॥ अरु अंतःकरणवृत्त्यवच्छिन्न चेतन्य प्रमाण
चेतन्य कहीये ॥ अरु घटाद्यवच्छिन्न चेतन्य वि
षयचेतन्य कहीये ॥ अरु अंतःकरणकी वृत्ति वि

५ षे फलितजो चैतन्य है सो फलचैतन्य कहीये॥ तहां वृत्ति अरु विषयका एककाल एकदेश वि षे अवस्थान संति तद्रूपहित दोनो चैतन्यों का हूं अभेद होवे है॥ सो दिखावे हैं॥ जैसे तडाग का ज ल छिद्र तें निकस कर के कुल्या द्वारा किदार विषे प्रवेश हूया किदाराकार होता है॥ तैसे इंद्रिय जो है सो विषय के सन्निकर्ष तें पीछे अंतःकरण इंद्रिय द्वा रा विषय देश को प्राप्त हूया तिस विषय साथ संयुक्त होवे है॥ पीछे तदाकार करके प्रणामी होवे है॥ सो यह परणाम विषयाकार वृत्ति क हीये॥ तिस वृत्ति विषे विषयचैतन्य प्रतिफलि त होवे है॥ तिसकाल विषे वृत्ति अरु विषय के एककाल एकदेश विषे स्थित करके तद्रूप हि

तचैतन्योंके भेदसाधिकको आवतें प्रमाणचै
तन्यविषयचैतन्यसांथ अभिन्नहोवैहै ॥ सोयह
प्रत्यक्षप्रमाहै ॥ तहांवृत्तिकरके आवर्णनिवृ
त्तिहोवेहै अरचेतन्यकरके अज्ञाननिवृत्तिहो
वेहै ॥ यह मृतवाचसपतिमिश्रकाहै ॥ अरप्रमा
करसावर्णअज्ञाननिवृत्तिहोवेहै ॥ प्रमाकही
येसवृत्तिचैतन्य ॥ सोयहमतआचार्यकाहै ॥
तिन अज्ञानकीनिवृत्तिकरकेसाक्षीकेविष
यफुरेहै ॥ साक्षीकहीयेअंतस्करणोपहितचै
तन्य ॥ सोयहप्रत्यक्षप्रमाद्विविधहै ॥ बाह्यांत
रभेदकरकें ॥ तहांबाह्यप्रमा श्रोत्रत्वक्चक्षुरूपगं रस
मेद्रसोंपंचप्रकारकी है ॥ रतेसकेकरराश्रोत्रादि

६ पेचहैं॥ आंतरश्रमाहू द्विविध है एक आत्मगोचरा
॥दूसरी सुखादिगोचरा॥ आत्मगोचराहू द्विविधा
है॥ एकवृत्तिस्थात्मविषयाहे॥ एक शुद्धात्मवि
षयाहे॥ अहंजीवा इत्यादिक वृत्तिस्थ आत्म
विषयाहे॥ अर अहंब्रह्मास्मि यह शुद्धात्मवि
षयाहे॥ अर मुज विषे सुख है इत्यादिक सुखा
दिविषयाहे॥ अंतरइंद्रिय मन आंतरश्रमाका
करण है यह वाचस्पति मिश्र कहे हैं॥ अर आ
चार्य इसप्रकार वर्नन करे हैं॥ इंद्रियेभ्यः परा
ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः इति॥ इंद्रियाणि
पराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परं मनः इन श्रुति
स्मृति करके मन के इंद्रियों ते पृथक् कहा

तें मन इंद्रियनहीं ॥ अरु श्रुतिके उपादानत्वतें मनकरण होनहीं ॥ इसीतें सुखादिसाक्ष्यात्कारके प्रमाणद्वारा अजन्यत्वकरके अप्रमात्व ही इष्ट है ॥ तातें अंतःकरणअरुतिनके धर्मोंकि शुक्तिरजतादिकोंजैसे प्रातीतिकत्व है ॥ ननु जैसे संवित्आत्मसाक्षात्कारके भी प्रमाणअजन्यत्वकरके अप्रमात्वकी प्राप्तहोवेहै जोक होअप्रमात्वहमोंकेइष्टहैतदपि शुक्तिरजतादिकोंजैसेआत्माकेभी प्रातीतिकत्वहोवेहै तिसप्रातीतिकदोषदूरकरणनिमित्त आत्मसाक्षात्कारप्रतिमनकेकरणत्व अवश्यतुजकेअंगीकारहे सिद्धांतीतहांदोषि

८ कल्पकरताहै कहावत्ति छ आत्मसाक्षात्का
रकेअप्रमात्वहै अथवाशुद्ध आत्मसाक्षा
त्कारकेहै तहांआद्यपक्षहैसोकेइष्टहैअ
रजेदूसराकेहै सोनही काहतेंजोशुद्धआ
त्मसाक्षात्कारकवेदांतवाक्यजन्यत्वतें
प्रमात्वहीहै अरवाक्यकेअपरोक्षज्ञान
जन्यत्वआगेकहेंगे ॥ इतिप्रत्यक्षप्रमा १
अथअनुमिति ॥ लिंगज्ञानतेंजन्यजोज्ञानहै
सोअनुमितकहीये ॥ व्याप्तकाजोआश्रयहैसो
लिंगकहीयतहै ॥ हेतुसाध्यकाजानेमकरसामा
नाधिकरन्यहैसोव्याप्तकहीये ॥ प्रतिबंधककेअ
भावककैसहचारकेदर्सनतेंव्याप्तग्रहणके

रीयतहै॥ तिसव्याप्तिग्राहीतसंस्कारलिंगज्ञान
ककैंव्याप्तकेअनुभवतेंजन्यसंस्कारकोउ
द्बोहयेंअनुमितउत्पत्तिहोतहै॥ यहस्वार्थअ
नुमितहै॥ अरपरार्थअनुमितन्याइकर
साध्यहै॥ न्याइकहीयेअवयवसमूह॥ सोअव
यवतीनहै॥ प्रतिज्ञाहेतुउदाहरणरूप॥ अथ
वाउदाहरणउपनयनिगमनरूपहैं॥ अबति
सकोदिखावैंहैं॥ जीवजोहैसोपरमात्मातेभि
न्ननहींसच्चिदानंदलक्षणत्वतेपरमात्माजे
सै॥ इहांजीवपरमात्मातेभिन्ननहीयहप्र
तिज्ञाहै॥ सच्चिदानंदलक्षणत्वहेतुहै॥ अरु

ते

८ लिंगनीइसीकोंकहतेहैं॥जोसच्चिदानंदलक्ष
णहेसोपरमात्मातेंभेदकोनहीपावता॥परमा
त्मावत् यहउदाहरणहै॥ मैंहों अरु अनुमेव
करोहो ओरकदाचित् अप्रयनहीहोवो इन
अनुमेयतेंजीवकेसच्चिदानंदलक्षणत्वहै
इसीतेंहेतुकीअसिद्धतानहीहोवेहै॥सत्यंज्ञा
नमनंतंब्रह्म॥आनंदोब्रह्मेतिव्यजानात् इत्या
दिश्रुतिकरकेब्रह्मकेसच्चिदानंदलक्षण
त्वहे इसीतेंदृष्टांतकीकूं असिद्धतानही॥
इसप्रकारगुरुमुखतेंश्रवणकीयाहैवे
दांतजिसनें ओरसाधितहैचंपदार्थजिसनें

आपविषै

तिस जिज्ञासी कैं सच्चिदानंद रूप नतैं लक्ष
णाकैं अहं ब्रह्मस्मि इस प्रकार ब्रह्मतैं अभिन्न आ
त्मनिश्चित होवैहै॥ ननु ब्रह्मैक्य तौ उपनिषद सि
द्ध है तिसकैं अनुमान गम्यता की असिद्ध है
सिद्धांती मंतव्यः इत्युक्ति करकै मनन कैं
रखेतें वेदांतकै संस्कार करकै अनुमान प्र
माण अंगीकृत है॥ अर परार्थानुमित न्याय
कै उपदेश करकै उत्पत्ति होवैहै सो न्याय आ
गे दिखाया है॥ ऐसे ब्रह्मतें व्यतिरिक्त प्रपंच
कै मिथ्यात्व [illegible] साध्य जो अनुमित है सो
दृश्यत्वादि हेतुं करकै उत्पत्ति होवैहै मि

९ ष्यात्व कहीये अनिर्वचनीय अरु रूपत्व क
हीये चैतन्य विषयत्व ॥ इसीतें ब्रह्म विषे व्य
भिचार नहीं ॥ सो अनुमान न्याइकके मत
विषे तीन प्रकारका है एक केवल अन्वय
एक केवल व्यतिरेक एक अन्वय व्यतिरेक
सो यह तीनहु मांहि के अंगीकृत है एक अ
न्वय रूप ही हमारे स्वीकार है एक अन्वय
रूप कहीये जो व्यवहार दशा विषे अंगीकृ
त होइ अरु परमार्थ विषे न होइ अब तिन तीनों
विषे दोष दिखावे है तहां केवल अन्वय कूं
नहीं कहैं तैं जो केवल अन्वय उसको कहै
सो भाव को नित्य कहना अरु केवल व्यतिरेक कूं हीये व्याप्य के अभा
व करि व्यापक के अभाव का ज्ञान ॥ अरु जे सर्व विषे एह देनो लक्षण

काब्रह्म

तिस का जो इस सिद्ध कर्ता हे उक्त वा पाठः॥ अर्थ

नैहे पदार्थ निष्ट जो अत्यंताभाव है तिस का जो प्र
सिद्ध कर्त्ता है॥ अरु हमारे मत विषे ब्रह्म व्यतिरेक
सर्व का ब्रह्म निष्ट अत्यंताभाव का निरूपकत्व
है॥ तिस अत्यंताभाव का अनिरूपक रूप
जो केवल अन्वयी है तिस की असिद्ध है॥ अरु के
वल व्यतिरेकी भी नहीं काहे ते जातें अनुमित वि
षै हेतु कर के साध्य का व्याप्ति ज्ञान होता है॥ अ
रु केवल व्यतिरेक विषै साध्य के अभाव कर के
हेतु के अभाव की व्याप्ति का ज्ञान होवे है तातें
ईहां केवल व्यतिरेकी भी नहीं तातें इन दोनों के
अभाव कर के तीसरा भी नहीं बनता॥ अरु

९ प्यात्वक हीये अनिर्वचनीय अरु रुपत्वक
हीये चेतन्य विषयत्व ॥ ३ सो तें ब्रह्म विषे व्य
भिचार नहीं ॥ सो अनुमान नैयाइक के मत
विषे तीन प्रकार का है एक केवल अन्वय
एक केवल व्यतिरेक एक अन्वयव्यतिरेक
सो यह तीन हमों के अंगीकृत हैं एक अ
न्वय रूप ही हमारे स्वीकार है एक अन्वय
रूप कहीये जो व्यवहार दशा विषे अंगीकृ
त हो अरु परमार्थ विषे न हो अरु तीनतीनों
विषे दोष दिखावे हैं तहां केवल अन्वय कूं
नहीं का है तें जो केवल अन्वय उसको कहे
ता भाव के नित्य कहते अरु केवल व्यतिरेक कूं हीये व्याप्य के अभा
व कर व्यापक के अभाव का ज्ञान ॥ अरु जे सर्व विषे एह दोनों लक्षण

का ब्रह्म

तिस का जो इस सिद्धकर्ता है ॥ २६ ते वा भार ॥ अर्थ

तैं हैं पदार्थ निष्ठ जो अत्यंताभाव है तिस का जो अ
सिद्धकर्त्ता है ॥ अरु हमारे मत विषे ब्रह्मव्यतिरेक
सर्व का ब्रह्म निष्ठ अत्यंताभाव का निरूपकत्व
है ॥ तिस अत्यंताभाव का अनिरूपक रूप
जो केवलान्वयी है तिसकी असिद्ध है ॥ अरु के
वलव्यतिरेकी हेतु नहीं काहेते जाते अनुमिति वि
षै हेतु करके साध्य का व्याप्ति ज्ञान होता है ॥ अ
रु केवलव्यतिरेक विषे साध्य के अभाव करके
हेतु के अभाव की व्याप्ति का ज्ञान होवे है ताते
ईहां केवलव्यतिरेकी हेतु नहीं ताते इन दोनों के
अभाव करके तीसरा भी नहीं बनता ॥ अरु

यह १ साध्य का जो ब्रह्म निष्ठ अत्यंताभाव है तिस का अत्यंताभाव को ब्रह्म विषे रहनेवाला कहते हैं १

१० सङ्गल्वयव्याप्तकोनजानताजोपुरुषहैतिस
के साध्यकीप्रमाविषेअर्थापत्तिआदिकप्रमा
णाकहीयतहैं॥ साह्रूपकोजोज्ञानहैसोउप
मितप्रमाकहीये॥ अरवाक्यहैसाधनजिस
काऐसीजोप्रमाहै सोशाब्दीकहीयतहै॥ वा
क्यकहीये आकांक्षा योग्यता सन्निधयुक्त
हैं जोपदसमूहहै॥ आकांक्षाकहीये अन्वयकी
ना अप्राप्त॥ अरयोग्यतेकहीयेवाक्यार्थकोअबा
ध॥ अरसन्निधकहीये अविलंबितउच्चारण
॥ अविद्वानपुरुषके संगतिकेमाहात्माकेअ
भावतेवाक्यार्थज्ञाननहीहोवेहै॥ संगति

कहीयेपरपदार्थोंका स्मर्यस्मारकभाव॥८
सोसंगतद्विविधा है शक्तिरूपा लक्षणारूपा
शक्ति कहीयेमुख्यावृत्ति मुख्यावर्तिकहीयेप
दअरुपदोंकेअर्थोंकावाच्यवाचकभावसंबंध
सोमुख्यावृत्तिहुद्विविधा है योगअरुरूढभेदतें
योगकहीयेअवयवशक्ति यथापाचिकादिप
दों का अरुरूढकहीयेसमुदायशक्ति।।जैसे घटादि
पदोंकी॥सोशक्तिव्यवहारादिकोंकरग्रहणाक
रीयतहै॥सोरईपावेहैं।वटमानययोंउतमव
धकेवाकप्रवरगात्तेंपीछेंमध्यमवचपरवित्तै

८८ होताहै॥बालकतिनकीप्रवृत्तिकोदेषकरके
ज्ञानकोअनुमानककैंतिसघटकाज्ञानमेरा
वाकाजन्यत्वकोअनुमानकर्ताहै॥सोदिखा
वैहै॥यहप्रवृत्तिज्ञानसाध्याहै॥जप्रवृत्तवते
मेरीप्रवृत्तिवत्॥ऐसेज्ञानकोंअनुमे
लिकैंअनुमानककैंपुनःइसज्ञानकोंबालि
त्व कवाक्यजन्यत्वअनुमानकर्त्ताहै यहजोप्रव
त्तिकरकेअनुमितज्ञानहैसोइसवाक्यतेज
न्यहै इसवाक्यकेअन्वयव्यतिरककेअ
नुकरणतेदेहजन्यघटादिवत् इनतेपा
छेअन्वयव्यतिरकाकरकेघटपदकीसा

क्ति को घट द्रव्यक्त विषे निष्ठयक नाहै नैया
यक कहते हैं यह शक्ति पद के अर्थ विषे है औ
र मीमांसिक कहते हैं सो शक्ति कार्यान्वित
पदों विषे है और हमारे मत विषे सो शक्ति प
दांतर युक्त पद विषे है इस प्रकार करके व्या
करण आदिक शास्त्रोंने भी शक्ति अंगीकार क
री यतहै सो कहा है ॥ शक्तिग्रहं व्याकरणोपमा
कोशाप्तवाक्याद्व्यवहारतश्च वाक्यस्य शेषाद्विवृ
तेर्वदंति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः १ याको
अर्थ शक्ति का ग्रहण व्याकरण ते होवे है उ
पमा ते होवे है कोश ते होवे है आप्त वाक्य ते हो
वे है व्यवहार ते होवे है पदांतर ते होवे है औ

१२ रूपा निष्पन्न होवै है ऐसे चन्द्र कहते हैं ॥ ११ ॥
अब लक्षणा कहीयत है ॥ शक्य साथ जो संबं
ध हो सो कहीये लक्षणा ॥ सो लक्षणा द्विवि
ध है ॥ एक केवल लक्षणा है ॥ एक लक्षित ल
क्षणा है ॥ तहां केवल लक्षणा त्रिविध है एक
जहती है एक अजहती है एक जहताजहती है
शक्य पदार्थ के परित्याग करके तिसके संबंधी वि
षे जो वर्तता हो सो जहत लक्षणा कहीये जैसे
गंगा विषे घोष वसता है ईहां गंगा पद संबंधी
तीर विषे घोष शब्द की सिद्धि होवै है अरु पदा
र्थ के त्याग करके तिसके अन्यो संबंधी विषे जो

वर्त्तणहोसोअजहत्लक्षणाकहीयेजैसेमं
चाक्रोशंति इहांमंचस्थपुरुषोंविषेशब्दकी
सिद्धताहै औरपदकेशक्तिहैताकेपरित्यागक
रकेऔरदेहविषेजोवर्त्तणहैसोजहत्अजह
तीकहीयेइसकोभागत्यागलक्षणाभीकही
यतहैजैसेसोयंदेवदत्त इहांसोअरअयंइ
नपदोंकाकेवलदेवदत्तकेपिंडविषेवर्त्तण
हे अथवातत्वमसिइनपदोंकाअखंडचैतन्य तै
विषेवर्त्तणहे येकेवलंलक्षणाकहीऔर ते
पदोंकेपरंपराकासंबंधलक्षितलक्षणा
कहीयेजैसेद्विरेफपदभ्रमरकोजनावेहे

अरु भ्रमर मधुकर कों जनावे है इत्यादि वृत्ति
अरु गौणी हू लक्षित लक्षणा है। जैसे सिंहो
देवदत्तः। ऐसे युक्तपद्यपुरुषवर्णविहणकीया
जो संगत युक्ति वाक्य है तिस वाक्यते वाक्यार्थ
प्रमा की उत्पत्ति विषे च्यार कारण। १ योग्यता
२ आसत्ति ३ तात्पर्यज्ञान ४ ये च्यार कारण
होत है। अकांक्षा योग्यता आगे निरूपण कर
दियो है॥ आसत्ति कही ये शक्ति अरु लक्षणा करि
के एक के संबंध करके अर्थ विषे ध्यान करके
पद जन्य जो पदार्थ है तिनकी प्राप्ति॥ अरु ता
त्पर्य द्विविध है एक वक्ता को दूसरा श्रोता का

श्रो
निरूप
दिपट्टी
मैन्यवृत्ति
गोपालभावचार्य

क्ता का अभिप्राय कहीये पुरुषकां तात्पर्य

क्ता के तात्पर्य का ज्ञान वाक्यार्थ ज्ञान विषे का

र्ण नही ॥ काहते जो तिन के अभाव से नेहुं

अव्युत्पन्न के वाक्य ते वाक्यार्थ ज्ञान होता है ॥

तिस ते भिन्न तिस ते भिन्न कहीये प्रासंगिक पद

घति क्रो विषे प्रतीत की अनिछा कर के

है संतिस प्रासंगिक पदार्थ के अर्थ प्रती

त की उत्पत्ति के योग्य जो हो सो कहीये शाब्द

तात्पर्य ॥ जैसे भोजन समे विषे सैधव मानय

ऐसे कहे संते सैंधव शब्द वाची जो लवण अ

२५

रूपब्रह्मप्रतिपादक हैं तिन दोनों प्रकार विषे अभ्य

कीअवृत्तीन अरुलव तृ की प्रतीत होवे

है॥ सो तात्पर्य बिचार विषे लिंगो करके निश्चे करी

यतु है सो लिंग वेद विषे दिखायाहे॥ उपक्रमो

पसंहारा वभ्यासो पूर्वता फलम्॥ अर्थवादोपपत्तीच

लिंगं तात्पर्यनिर्णये १ इसका अर्थ प्रकरण विरति

पाद्वै को अद्वीतीय वस्तु विषे जो आदि अंत विषे

प्रतिपादन है सो उपक्रमोपसंहार कहीये॥ १

जैसे छांदोग्य के षष्ठ अध्याइ विषे कहा है॥ सदेव सो

म्य इदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म एतदात्म्य

मिदं सर्वमिति॥ इति उपक्रम उपसंहार है आदि

अर्थ
तात्पर्य का निर्णय

गृहस्थविना

औरतिस विषै ॥४॥ अरु प्रकर्ण प्रतिपाद्य के पुनः पु
नः प्रतिपादन यह अभ्यास है। जैसे तहां छांदोग्य
विषै तत्त्वमसि इन महावाक्य कौ नव वेर अभ्यास
कह्यो है २ अरु प्रकर्ण प्रतिपाद्य के मानांतर की
प अविषैता सो अपूर्वता है ॥ जैसे तहां छांदोग्य विषै
अद्वितीय वस्तु के मानांतर की अविषैता कही य
है ॥३॥ प्रकर्ण प्रतिपाद्य के तिस अद्वितीय के ज्ञा
न ते प्राप्य माण जो प्रयोजन है सो फल कहीयत
है। जैसे तहां छांदोग्य विषै कहा है जो आचार्य
साक्षात करता है गुरुवपुरूप
वान पुरुष जानता है॥ २ तिस कौ रवान के तो लों
चिर है जो लों प्रारब्ध कर्मफल भोग कर बंधन ते
साक्षात

५ नहीमुक्तहोता इनतीपीछे आरब्रह्मोगाकरके
परमात्माहोताहै॥सोयहफलकहीये॥इसप्र
कारअद्वितीयवस्तकेज्ञानतेअद्वितीयवस्त
कीजोप्राप्तहै॥४॥अरप्रकर्णप्रतिपाद्यवस्त
कीजोस्तुतिहैसोअर्थवादकहीये जैसेतहांही
छांदोगविषेकहाहै जिनअद्वितीयवस्तक
रके अश्रुतिश्रुतिहोताहै अमतमतहोता
है अविज्ञातविज्ञातहोताहै ५ अरप्रकर्णप्र
तिपाद्यअद्वितीयवस्तकादृष्टांतोंकरजोप्र
तिपादनहै सोउपपत्तिकहीये जैसेतहां
छांदोगविषेकहाहै हे शिष्य जैसेएकमत

पिंडकी ज्ञान करके सकल मृन्मयकी ज्ञात
होती है और विकार नामधेय कथन मात्र है
मृत्तिका ही सत्य है इत्यादिक वाक्यों करके
प्रतिपादित जे मृदादिक दृष्टांत हैं तिनहु क
रके अद्वितीय वस्तु का प्रतिपादन है ६ इस
प्रकार षट् विध तात्पर्य लिंगों करके वेदांतों
का अद्वितीय ब्रह्म विषे तात्पर्य निश्चय है यही
श्रवण कहीयत है १ और श्रुति अर्थ का युक्ति
यों करके जो चिंतन है सो मनन कहीयत है
२ और विजातीय प्रत्यय के तिरस्कार करि
के सजातीय प्रत्यय विषे जो प्रवाह है सो नि

१६ दध्यासनकहीयतहै ३ जेसेकह्योहै वेदां
तोंकानिरूपणजोतात्पर्यविषेहोसोविचार
वानोंनेंश्रवणकहीयतहै अरवस्तुतत्ववि
षेयजोयुक्तनिरूपणहैसोमननकहीय
अरचित्तकोजोचिन्मात्रप्रवाहहैतिनको
वेदवेत्तानिदध्यासनकहतेहैं यहजोश्र
वणहैसोवैराग्यवानसंन्यासीकेब्रह्मसा
क्षात्कारप्रतिअंतरंगसाधनहै ॥ आत्मावारे
द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्य इत्यादिश्रुतेः
अबचारसाधनकहीयतहै॥ नित्यानित्यवस्तुवि
वेक १ इहामुत्रार्थफलभोगतेंवैराग्य २ शमदमा

ईश्वरसंपूरसमर्पणता४ यहचारसाधनहै।
लोकौंकोकर्मरिरचितपरीक्षाकरकैब्राह्मण
निर्वेदकोप्राप्तहूयाअकर्त्ताआत्माकेहृतक
र्मकैरकेकछुनहीं॥इसीतेंतिसअकर्त्ताकेवि
ज्ञानार्थीसंवित्तपाणाहूयागुरुकोप्राप्तहोवै
॥कैसेगुरुकोश्रोत्रियअरब्रह्मनिष्ठकोईए
कधीरप्रत्यगात्माकोसाक्षात्कारकर्त्ताभ
याअनावृततत्त्वचक्षुहूयाऔरअमृततत्त्वकोच
हतोहूया॥१॥शांतदांतउपरततितिक्षुस
माहितहोयाकरकैंआत्माविषेआत्माको
देखैहै॥२॥इत्यादिकश्रुतीयोंतैंयथोक्त

साधनसंपन्नकेसन्यासकाअधिकारहै
॥सन्यासकहीयेविहतकर्मोकाविधकरकें
परित्याग॥सोसन्यासवैराग्यहेतुकहै॥
सद्दिनवैराग्यकोप्राप्तहोवैतिसीदिनसन्या
पर्मे सग्रहणाकरे इत्यादिकश्रुतिनें॥ वैराग्य
इनमोक्षकापर्मअरविधसाधनहैइनश्रुति
तेंहं वैराग्यकारणहै॥सोसन्यासतरतम
भावतेंचतुरविधहै॥कुटीचकबहूदकहं
सपर्महंसइनभेदतें॥अरवैराग्यपरअप
परभेदतेंदोइविधहै॥तहांअपरसातमान
खिवेकवशीकारभेदतेंचतुरविधहै॥
एकेद्रिय

अब इन के लछ्छण॥ इन संसार विषय
ह सार हे यह असार हे इस प्रकार सारा
सार का जो विवेक हे सो यत्तमान वैराग्य
है॥१॥ अब र चेत गत्ते दोषों के मध्य विषे
तने पक्क है अब एतने अपक्क हे ऐसे विवे
क कर के अपक्क के निरोधन में जो
यत्तन हे सो वितिरेक वैराग्य कहीया॥२
विषय इन्द्रीयां ते हं मन विषे इन्द्रीयो के
निरोध का जो अवस्थान हे सो एकेंद्रीय
त्व वैराग्य हे॥३॥ इन लोक परलोक के
विषयों की रिजे हा सो सो वशी कार हे॥४

विषय

१९ सोकहाहै॥ दृष्क अरु श्रुति विषि धमके
वशीकार संज्ञा है॥ ४०॥ सो वशीकार
त्रिविधहै॥ मंद तीव्र तीव्रतर॥ पुत्रदारा
दिकों के वियोगतें धिक है संसार कों इ
न बुद्धि कर जो विषयों का त्याग इच्छा है
सो मंद वैराग्य कहीयत है १ अरु इन ज
न विषै पुत्रदारादिक मत होवें इस प्रका
र स्थिर बुद्धि कर जो जिहासा है सो तीव्र
वैराग्य कहीये २ पुनराद्य तिस हि न ब्र
ह्म लोकादिपर जन्म मत हो इस प्रका
र स्थिर बुद्धि कर के विषयों की जा जि

हास है सो तीव्र तर वैराग्य कहीये ३ तहां
मंद वैराग्य विषे संन्यास के अधिकार कूं
नहीं ॥ तहां प्रमाण है जद सर्व पदार्थों विषे
मन करके वैराग्य होवै है तद ही बुद्धिवान
संन्यास को ग्रहण करे अन्यथा पतित हो
वै है इति स्मृति ॥ अरु तीव्र वैराग्य संति
यात्रादिकों विषे आरूढ करके कुटीचक
संन्यास का अधिकार है और यात्रादि
क की शक्तिं करके बहूदक संन्यास
का अधिकार है अरु तीव्रतर संन्यास

९८ संति हंससंन्यासका अधिकार है यह त्रै
यसंन्यासहै अरइनोंका आचार स्मृतिवि
षेप्रसिद्धहै॥ अरतं अंतरसंन्यासविषेउ
उल्यकेपर हंससंन्यासका अधिकार है
सोपरमहंसद्विविधहै एकविविदिसंन्या
सहै दूसरा विद्वतसंन्यासहै॥ साधनसंप
न्नेनें तत्वज्ञाननमित्त क्रियमाण जो संन्या
सहै सो विविदिषासंन्यासहै तहां इनआ
श्रमोंकों वहहते हूये संन्यासी संन्यास
ग्रहणकरतेहें॥ इत्यादिक श्रुतिप्रमाण

है सो विविदिषा संन्यास द्विविध है एकजन्म
ान्तरके कर्मों का त्यागरूप अरु प्रैषोच्चा
रणपूर्वक दंडधारण आदिक आश्रम
रूप है सो तहां आद्य विविदिषा संन्यासके
विषे श्रुति प्रमाण है न कर्मकर मोक्ष को प्रा
प्त भये न संतान कर के न धन कर केवल एक
त्याग ही कर मोक्ष को प्राप्त भये ॥ इत्यादि
॥ किंतु गृहस्थादिक के प्रबल निमित्तके
वशात् करके आश्रमरूप संन्यास विषे प्र
तिबंध से तिस आद्य संन्यास विषे अधिका
र॥५५॥

२ प्रैषः नाम मंत्र का है जो मंत्र तिस का उच्चार
करना है तदर्थ सन्यास का के आगे कारण
प्रैषं ॥ २

२० रहै इहां स्त्रीयोंके अधिकार रहै॥ जनका
दिकमैत्रेयी आदिके जे तत्ववेता हैं तिनकू
के श्रुतिस्मृतिइतिहासपुराणोंविषेजा
नावणांतें॥ अरतृतीयआश्रमरूपविवि
दिषासंन्यासविषेदंडआछादनकोपीन
कोधार अरशेषकात्याग॥ तहांप्रमाणहै
संसारकोनिःसारजानके अरसारकै
देखबेकी इछाकरके विवाहआदिकों
कौंत्यागकरसंन्यासकोंग्रहणकरेहैं
परमवैराग्यविषे। स्थितहूये इत्यादि

वचनप्रमाणहैं॥१॥ग्रहणत्यागरूपविवेककाये [above the line: रिक]
जोश्रवणादिकहैंतेनोकरउत्पन्नहैब्रह्मसाक्षात्
कारजिसकेऐसाजोग्रहणादिकहैंतिसंनेविक्षप्त
रचितपुरुषकेचितविषयान्तलक्षणऐसाजोजि
ज्ञासुकेहैतिसंनरंमितकस्याजोसन्यासहैसो
विद्वतसन्यासकहीयतहै॥तत्रैतमेवविदित्वामुनि
र्भवति॥मुनकाअर्थयहहैमैब्रह्मंहूंऐसेसाक्षात्कार
करकैमननशीलहोवैहै॥अरयोगीयोपरमहंसोंके
जीवन्मुक्तिअवस्थाहीफलहैइत्यादिजोपरमहंसो
पनिषद्हैं॥अरयहसनातनधर्मजोआत्मविद्तहो
वैहैतबएककंठकोग्रहणकरकेउपवीतसरह
तसिषाकोत्यागकरेइत्यादिश्रुतिस्मृतवचनप्र

ननु विवदिषा संन्यास ज्ञानका हेतु नहीं काहेतें जो जनकादिकोंकेविषै विद्विषा विना ज्ञानकी प्राप्ति

२१ भईहै नहीं आद्य संन्यास जो विविदिषा है सो जन्मांतर विषै ज्ञानको उपकारी होवैहै जैसे श्रुतिस्मृतिकों विषै कहाहै जो जनकादिकोंके तत्व ज्ञानकी प्राप्ति भईहै ॥ अरजब आतुर होतभ मन वाणीकर संन्यास ग्रहण करे इस प्रकार आतुर संन्यासके करणते विविदिषा संन्यासके उपकारत्व है अर आतुर रक्षण विषै हूं विरक्त के संन्यासांतर नहीं अर्थात विविदिषा संन्यासही है ॥ अन्यथा प्रकार विषय विरोध प्रसंग होवैहै ॥ सो कहाहै जन्मांतर विषय जैसको साधन समूह भयाहो अर संन्यास पूर्वक श्रवणादि करहूं भयाहो सो सकल जन जहां तहां आश्रमादिकों विषै वसता

६. तत्त्वप्रत्ययः
स्त्रियधरपंच

ह्याज्ञानकोपावेंगे॥इनकोहमरनेवारोनहींक
रतें॥सोऐसेपूर्वोक्त अधिकारीके अवणादि
कोके तत्त्वज्ञानकेकारणता अन्वयव्यतिरेककर
केरनेअयकरीयतहै॥तातेंअवणादिकोंकातत्त्व
ज्ञानप्रतिकारणत्वहै ब्रोतव्यइत्यादिपदोंकरकेवि
धरूपतानहीं॥ननुश्रोतव्यइत्यादिपदविषेतव्यप्र
त्ययकौनअर्थ है॥उत्तर तव्यप्रत्ययकोअर्थ
स्विवैहै विधअर्थविषयनहीं ऐसेवाचस्पतिमि
श्रकेहतेहै॥अरुआचार्यइसप्रकारकहतेहै॥य
थोक्तअधिकारीकेद्रष्टव्यश्रोतव्यइत्यादिवाको

स्त्रियैनिर्धारितवैराग्यश्रवणादिकेआयहैं॥

स्त्रिवैमाघ्र

करकै दर्शन न रमित्त मनन न रनैदध्यासन फलोपका
री जो अंग है तिनो अंगों का र अवण नाम अंगी
जानीयतु है तिस अंगी के अदृष्ट फल त्वते अपूर्व
विधता नहीं अपूर्व विध अप्राप्त अर्थको विधा
यक होता है ॥ किंतु ईहां नेम अरपूर्व संख्या विधौ
॥ नेम विध कहीये पक्ष प्राप्त के अप्राप्त अंस का
पूरक ॥ जैसे ब्रीहीनु अवहन्यात्‌ ॥ अर्थ यह धान्यों का
वितुष करणां नखों कर भी होवे है परंतु इस प्रका
र वितुष हुये यागविषय अयोग्य होते हैं ॥ तिस
अयोग्यतारूप अप्राप्त अंस का पूरक जो मूसल

॥ टी ६८

येनेमखविधेहै॥ अरुवेदांतश्रवणादेना
करअरुविघातहैसोनेमखविधेहै॥२॥ अरुउभ
यकेंप्राप्तखिषयएककोनषेधबोधकजो
खिधहैसोपरिसंख्याविधहै॥ जैसेवेदखिष
यकह्योहैजोपसुकीरंसनाकोग्रहणाकरै॥
सोइनवाक्यखिषअस्वकीरसनाकाग्रहणाहै
गर्धभकीरसनाकात्यागहैअयोग्यतातें॥ जैसे
असंगखिषायरूं जिज्ञासीवेदांतश्रवणाहीको
करैऔरश्रवणकात्यागकरै॥ यहपरिसं
ष्याखिधहैसोकह्योहै॥ नेमअरुपरिसंख्याबि जातें
धेकोअर्थहोवैहै॥ तातेंहमअनात्माकेश्रवणनि

करकेपर्मात्माकोउपासैहैं॥सोप्रथमासन्या
सीकेरनैत्यहैसोकह्योहै॥जौंनैत्यकर्मकोत्या
गकरकेवेदांतश्रवणरविना वर्त्तमानजोस
न्यासीहैसोवर्तमहोवैहे॥ यहश्रुसंन्यायहे॥
इसप्रकारवेदांतकेश्रवणरवेषेप्रत्यवा
यकेश्रवणतें॥सुप्तश्ररमृत्युपर्यंतकालकूं
वेदांतचिंताकरकेव्यतीतकरइनप्रेतकर
केजीवपर्यंतश्रवणकोकरे॥यावज्जी
वमग्निहोत्रंजुहुयात् इत्यादिकश्रुतिकरकेजीव
नपर्यंतअग्निहोत्रकेविधानजइसेंग॥औरस्तकरे

कर्म

है॥ स्वपदार्थ के विवेक नर मिन सर्व कर्मों का सन्यास
कुरिने कह्यो है॥ और यह प्रकार त्यागी परतीत होवै है॥
जैसे साधन के करणे कर के सन्यासी तिन स्वरूपतें
परतीत होवै है॥ तैसे अप्रवरतादि के परित्याग ने भी
घरे ही परतीत होवै है॥ जैसे वार्त्त के आचार्य क्रूर स्वरूप
शरीर का चार्ये निश्चय दि रहित सन्यासी के
परतीत कहराते वेदांत श्रवण के अकरणतें प्र
त्य वाई होवै है॥ अरु गृहस्थादि को के ह श्रव
ण का भय है॥ तहां कह्यो है रदिन रदिन स्वविषय मगन
संयुक्त गुरु कृपा शुश्रूषा करके लब्ध वेदांत के श्रव
णतें अं सी कश्चे इच्छा के फल को पावै है॥ औ

२५ तुलाधारकहीयेत्रकडीमोलरा

रइसप्रकारकहतेहैंजोवेदांतश्रवणविषय

साधनचतुष्टसंपन्नकोअधिकारहैगरहस्तादि

ककेश्रुतीयोंविषेअधिकारनहीं॥ यज्ञवलक

जनकादिकोंकेतत्वज्ञानप्रतिपादकजो

उपाख्यानहैतिनकाइंस्तात्मविषयतात्पर्य

यहैस्वार्थविषेतात्पर्यनहीं सोकहतेहैंसो

असतहै। काहतेजोयज्ञवलकादिकोंकेअर

गरहस्तीऔरजोतुलाधारहैतिनकेज्ञानित्वके

स्मरणतेअर्थयहवहहूज्ञानीहै।। अबपरवैरा

ग्याकुलोविषेवेतघ्यअर्थयहविधायोविषेत्या

गेष्ठा॥ तहांसूत्रप्रमाणहै॥ ततःपरंपुरुषख्याते

गृहस्थाश्रमसमाप्तौ तुलाधारविग्रहेति

गृहस्थादिकोंका अधिकार

अर्थ यह त्तिनतत्तैपाछेवैराग्यधितत्वंपदकेगुणवैत
स्यहे॥सोयहपरवैराग्यअसंप्रज्ञातसमाधिको
अंतरंगसाधनहे॥सोकहाहै तीव्रसंवेगैकिस
माधिकोलाभनिकटहे॥अलभत्तिप्रसंगेन॥इस
प्रकारकर्मवाक्योंकेभीउपक्रमादिकोंकरके
तात्पर्यनिर्णयहैलौकिकवाक्योंकाप्रसंगक्र
रकैंनिर्णयहैजिनवाक्योंविषेईदृश्यतात्पर्यो
कीअज्ञातहोवेहैतहांपूर्वोक्तलक्षणाकाउदैहोवेहै
॥नकोईअन्वयकीअसिद्धतालक्षणाकाबीज
है॥काहेतेजोयष्टीकोप्रवेशकरावोइत्यादिकवि
षेअन्वयकीसिद्धसंततिहूंलक्षणाकाउदैहोवेहै॥

अर्थयह जैसेप्रसंग होतैसा जाणणा

यद्यपि गंगायां घोषः इत्यादिकरविषे अन्वय
केअसिद्धहेतैं भी तात्पर्यकी अनुपपत्तितैं लक्ष
णाका उदै होवैहै। न कोई अन्वयकी अनुपपत्ति
तै लक्षणा उदै होवै है। न केवल पदमात्रवर्ती
है लक्षणा। किंतु वाक्यवर्ती भी है। काहेतें जो
तैसें भी गंगा नदी विषे घोष है इत्यादिक विषे
पदसमूह जो वाक्य है तिसका तीर विषे लक्ष
णाकूं अंगीकार है। इसीतें अर्थवाद वाक्यों
की प्रशस्त्य विषे लक्षणा है। अन्यथा पदमात्रके ल
क्षणा ग्रहणतें पदांतरोंकी व्यर्थता होवै है। जैसे
एकादशी माहात्म्य विषे कहा है जो एकादशी व्रत कर सर्व

यज्ञों का अरत्तीर्थों का फल होवै है इत्यं वाक्य सम
ह कहै एकार्थभूत के अपेक्षत्व विवेल हरणा है॥ अन्य
था कहीये लक्षणा के एक पद मात्र के वर्त्तरातें और
भाव पदों का अर्थ होवै है॥ इसीतें अपेक्षत्व करके जो पक्षा
र्थ विषे प्रतीत भाव है तिन कर के अर्थवाद वा
क्यों का पदस्थानीय भावकरके पदैक वाक्यत्व
है और मुख्यार्थ विषे तात्पर्यवान जो समिधो
यजते दर्शपूर्नमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत
इत्यादिक वाक्य हैं तिनकुं का उपकारक
और उपकार्य की आकांक्षा विषे जो एक
वाक्यत्व है सो वाक्यों का एकवाक्यत्व है

२६ जैसे अवांतरवाक्यार्थज्ञानकूं महावाक्यार्थज्ञानविषेकारण है काहेते जो अन्वयव्यतिरेककेअनुकूलवर्तेताते लक्षणावत्॥ इसप्रकार यथोक्तसहकारीसंपन्न जोवाक्य है सोपरोक्षअरअपरोक्षद्वैविधभेदकरके जोप्रमा है तिनकोउत्पतिकरे है॥ तहांपरोक्षअर्थकाप्रतिपादकवाक्यपरोक्षप्रमाकोउत्पादक है सोदिखावे हैं॥ जैसे स्वर्गकामोयजेत॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत॥ दशमोस्ति इत्यादिकवाक्यपरोक्षप्रमाकेजनक हैं॥ परो

रूपत्व कहीये योग्यविषयका अनाहत सं
वित साथ्यतादात्म्यका अभाव ॥ अरु धर्मी
धर्मके अनाहतसंवितसाथ्यतादात्म्य सं
ति हूं इंद्रीयोंके अविषयते परोक्षत्व है ॥
अरु अपरोक्ष अर्थका प्रतिपादक जो वा
क्य है सो अपरोक्ष प्रमाका जनक है जैसे
दशमस्त्वमसि तत्त्वमसि इत्यादिक वा
क्य जो अपरोक्ष प्रमाका जनक है अपरोक्षत्व
कहीये अनाहतसंवितसाथ्यतादात्म्य
अनाहतसंवित कहीये साक्षीचेतन्य

२७ साक्षीकंहीयेअंतस्करणोपहितचैत
न्यतिसके आवरणसेंतिजगतके अध्या
स्मसंगहोताहै॥ अर अनात्मसंवित
तादात्म्यकहीयेपरस्पर भिन्नत्वसंति
साक्षीके भिन्न [illegible] अर विष
२१ यकें भिन्नसत्ताकत्व सो दिखावेहै द
शमस्त्वमसि इसवाक्य विषे दशमश
[illegible] के त्वंपदार्थते अभिन्नताकरके
अभेदोत्पादक करके वाक्यते दशमोस्मि
ऐसे अपरोक्षप्रमाउत्पत्तिहोवेहै॥

ननु वाक्यते परोक्ष ज्ञान होवै है अरु म
नन करके साक्षात्कार होवै है उत्तर सो
नही काहे ते जाते मन को अलिंद्रियपना
आगे कह्या है अरु मन को रजगति उपा
दानत्व करके साधनहोवणेको अयोग
है अरु जो प्रमाणजन्य परोक्ष ज्ञान ही के
भ्रम निवर्तकत्व है इन हेतोकर अपरोक्ष
प्रमाविषे वाक्य ही के साधनत्व है मनके
नही ॥ तैसे तत्त्वमसि इस वाक्य विषे तं
तत्पदको लक्ष्य जो अर्थ है तिसकी त्वं पद
लक्ष्य साक्षी माथ अभिन्नता करके अ

२८ ॥ नारत्तसंवित्तकेऐ कयतेनित्यऐश्रोत्त
॥त्यकरके सोधितत्वंपदार्थे अधिकारी
के मननिरध्यासनकरकेसुद्वेऐं
तस्करणहे [illegible] सहकारीविचारि
नेजोतत्त्वमस्यादिवाक्यहे तिसतेऐहं
ब्रह्मास्मिरह अपरोक्षप्रमाउत्पतिहोवे
है ऐसेसंति सकलवेद जिसपदकोमा
नेहैं तिसऐपनिषदपुरुषकोंपूछोंहूं
अरवेदोंकाऐवेतातिसब्रह्मकोनहीजाने
है इत्यादिकश्रुतीसुंदरताकरकेसिद्ध
होवेहैं ननमननकरकेदेखवेजोगहे इन

अथवा

श्रुतिकी कोन गति है उत्तर यह श्रुति मन
के वाक्य की सहायता को प्रतिपादन करे
है अन्यथा यन्मनसा न मनुते इत्यादिक
श्रुति का विरोध प्रसंग होइगा इति शब्द
प्रमाण निरूपिता ॥ ४ नव जाने अर्थ के दृष्टीत्र
तें तिनका सिद्ध करना जो और अर्थ है तिनका जो
कल्पन है सो अर्थापत्ति प्रमा कहियें। जैसे दिनको
न भोजन करता जो पीन पुरुष है तिनके रात्रि भोजन
विना अनुपपद्यमान जो पीनत्व है तिनके ज्ञान तें पीन
त्व को उपपादक रात्रि भोजन को कल्पन है। तहां असि
द्ध होता जो पीनत्व को ज्ञान करण है और रात्रि भोजन

कल्पन कल है॥ सो अर्थापत्ति द्विविध है॥ एक दृष्टार्थापत्ति है
२९ एक श्रुतार्थापत्ति है॥ दृष्टार्थापत्ति को दिखावै हैं
जैसे शुक्ति विषे इह रजत है इस प्रकार अनुभू-
यमान जो रजत है तिस का नहीं यह रजत
जो [illegible] बाध्यत्व है सो [illegible] सत्यापत्ति [illegible] न
[illegible] विषे रजत का बाध बिना मिथ्यात्व
के नहीं माने मिथ्यात्व की कल्पना होती है
जैसे देखा जो बाध्यत्व है सो बाध्यत्व ति-
स रजत के सत्यत्व विषे मिथ्यात्व बिना अ-
नुपपन्न हूया मिथ्यात्व को कल्पना करे
है तहां प्रभाकर इस दृष्टांत को न सहता

पुरुषप्रवृत्तिकाअभाव
प्रसंगनहोता

कृयाहैज्ञानकहताहै इहभाकारप्रत्यक्ष
औररजतस्मरणात्मिकतातेरजतमिथ्या
नही उत्तर इहरजतयहएकज्ञानहै
काहतेजेदोइज्ञाननहोते तोपुरुषकीप्र
वित्तिकाअभावप्रसंगहोता औररजत
केअसतकहेसंते तिसरजतकेप्रत्यक्ष
त्वकेअभावप्रसंगहोवेहै औरसतक
हेसंतेबाधकेअभावकाप्रसंगहोवेहै
औरदेशांतरसतसते रजतसाथइंद्रि
यसन्निकर्षकेअभावकरकेप्रत्यक्ष
त्वकाअभावप्रसंगहोताहै औररज

२: तकोंसाक्षात्कयेंहूं यहअनुभवसि
द्धकेअनुभवसिद्धहे तातेजाग्रकाल
मेंशुक्तिकाकेखंडविषेरजतउत्पत्तिहोवे
हैयहअंगीकारकरणेयोग्यहे सोजोम
लौकिकप्रकारदिखावेहे रजतउत्पादककेंसाम
ग्रीकेअभावसेंतिहूंपरोक्षभीशुक्तिकाखं
डसाथइंद्रियसंन्निकर्षतेंपाछेइदमा
कारवृत्तिसेंति इदमवछिन्नचेतन्य
विषेनिष्ठजोअप्रसिद्धत्वप्रकारकअ
विद्याहे सोसादृश्यदर्शनकरकेउदय
हूयाजोसंस्कारहे तिससाध्यसंस्कृत

६

कूइरजताकारकरके अर रजतज्ञाना
कारकरकेपरणामीहोतीहै तिसरज
तज्ञानके मायाकार्यत्वतें मिथ्यात्वहै॥
इतिदृष्टार्थापत्ति: १ अबश्रुतार्थापत्तिर्दिखा
वेहैं॥आत्मवेत्ताशोककोतरेहैइसप्रकारशोककश
रके उपलक्षितजो त्रिपुटीरूपबंधहै तिनकाश्रु
तयाजोज्ञाननिवर्त्यत्वहै सो ज्ञाननिवर्त्यत्व तिनशो
कोपलक्षितत्रिपुटीरूपबंधके सत्यत्वविषेरमिथ्या
त्वविनाअनुपपन्नहुयारमिथ्यात्वकोकल्पनाकरेहै
॥सोयहश्रुतार्थापत्तिहै॥अबत्रिपुटीरूपपमोत्तनादि

३१ कोजनावैहै अंतस्करणविशिष्टचेतन्यको प्रमाता
कर्त्ताभोक्तावकहीये काहेतेजो केवलआत्माके
असंगत्वकरके प्रमातृत्वादिकोंकेअनुपपत्तिहै
ताते अंतस्करणविशिष्टकोहै अरमुक्तरजतजे
सेआत्माकेअज्ञानते अंतस्करणादिकस्वरू
पकरकेप्रत्यगात्माविषेअध्यस्तहैं॥अध्यास
कहीयेओरविषेओरकाअविभासण॥सोअ
ध्यासद्विविधहै एकज्ञानाध्यासहै दूसराअ
र्थाध्यासहै तहांओतप्रिमनूतद्बुद्धिः यहज्ञा
नाध्यासहै जैसेमुक्तविषेरजतबुद्धि अरआ

गैतैसेविषतैसैबुध

त्मा विषे अनात्मबुद्धि इति १ अरु प्रमाणअ
जन्यजो ज्ञान नहै तिसका विषयहै अरु पूर्वदृ
ष्टका सजाति है सो अर्थाध्यास कहीये सोहू
द्विविध है एक प्रातीतक दूसरा व्यावहारि
क॥ आगंतुक दोषजन्य प्रातीतक कहीये जै
से शुक्ति विषे रजतादिक॥ अरु प्रातीतकतें भि
न्न व्यावहारिक कहीये जैसे आकाशतें लेक
र घट पर्यंत जगत्॥ २ तैसे संति प्रमातृत्वा
दिबंधके अध्यस्त भावकरके मिथ्यात्व ब
नै है इसी अभिप्राय करके भगवान् भाष्यका
र ने कह्या है स्मृतिरूपापरत्रपूर्वदृष्टावभा
सइति

३२ अस्यार्थमाह स्मृतिरूप कहीये संस्कारज
न्यत्व करके स्मृतिके सदृश परत्र कहीये औ
र स्थान विषे पूर्वदृष्टावभास कहीये पूर्वदृष्ट
का सजातीय अवभास यह अर्थ ज्ञानाध्या
सपक्ष विषै है अरु अर्थाध्यासपक्ष विषै प्र
माण अजन्य ज्ञान का विषै पूर्वदृष्ट सजातीय
का अवभास इस प्रकार अर्थापत्ति निरूप
ण करी इति अर्थापत्ति प्रमा ५ अब अभाव प्रमा
कहते हैं॥ योग्य की अनुपलब्धि है करण जिसका सो क
हीये अभाव प्रमा। जैसे घटादिकों की अनुपलब्धि
करके घटादिकों की अभाव प्रमा भूतल विषे होवै है

"यंत्रैं॥४ अर्थ यह ए पर्व (सा) थसें बंधकर के
पा चे इद्रय क्षीण हो जाता है" २

तहां अनुपलब्धि ही कारण है तें इंद्रय। ।। को हते जो
त्तिस इंद्रय के अधिकरण बिरहता कर के हीणता है
अरु अभाव सा थ इंद्रय सनकर्ष को अभाव हो। कै
एक ही ये असाधारण कारण। कारण कही ये जो नेम
कर के कार्य पूर्व वर्ती हो। सो कारण दुविध है एक उपादा
न इसरा निमित्त॥ उपादान कहीये कार्य अन्वित
कारण। जैसे घटादिकों का मृदादिक॥ अरु कार्य
के अनुकूल व्यापारवान निमित्त कहीये जैसे
घटादिकों के कुलालादिक॥ तैसे ब्रह्म कूं माया
पहित कूं या उपाध के प्राधान्य कर के प्रपंच का
उपादान कारण है अरु स्वस्वरूप की प्राधान्य
ता कर के निमित्त है तहां श्रुति प्रमाण है सो है

३३ स्वतोभया अर बङ्कुतहोवो आविस्भावकोपावे
इत्यादि अरसूत्रप्रमाणहूं हे प्रकृतिअगतहूं
दृष्टांतानुपरोधात् अर्थयहे प्रकृतिकहीयेप्र
पंचकोउपादान अरचकारकरके निमित्तहू
अहहे प्रतिज्ञाअरदृष्टांतके अनुकूलचेते
प्रतिज्ञाकहीये जिसएकके श्रवणते सर्वका
श्रवणहोताहे अर जिसकेज्ञानकरके सर्व
काज्ञानहोवेहे इत्यादि अरदृष्टांतकहीयेजे
सेएकमृत्पिंडज्ञानकरके सकलमृद्विका
रकाज्ञानहोवेहे सोकारणद्विविधहे साधार
ण असाधारणभेदते कार्यमात्रकोउत्पादिक
साधारणकारणहे जेसे अदृष्टादिक अर

कार्यविशेषको उत्पादिक साधारण कारण
कहीये जैसे कृशादि गमा विषे चक्र रादिक
तैसें संति घटाद्यनावृगम्भू विषे घटाद्यपलब्धि न
असाधारणकारण है सोही करण है जे इहां
घट होता ऐसे तर्क गोचर प्रतियोगी के सत्व
करकें तद्घट प्राप्त होता ऐसे साधित उपलं
भ्रूरूप है प्रतियोगी जिसका सो कहीये योग्य
की अनुपलब्धि तिसी करके अभावप्र हण
करता है। अब अभाव का लक्षण कहे हैं। नञ्
अर्थ के उल्लेख नधी का रवि षेअभाव कहीयत है।
सो अन्योन्याभाव एक कहीहै। काहे ते जो भेद विषे प्रमा

नञ् कहीये नहीं

नैयायक कहते है अत्यंताभाव अर अन्योन्याभाव अनादि
नित्य है सो एह कहणा अद्वैत श्रुति साथ विरोध पावता है
ताका अभाव है सो इद्रिखावै है॥ सदेव सोम्येदमग्र
आसीत् मच्चा द्धि परस्य इन मे त्र श्रुति कर के अत्यंत
ते पहिले कार्य के कारण रूप करकै सद्भाव के प्रतिपाद
न करकै प्रागभाव के दुरनिरूपत्व है॥ २ आत्मज्ञान
ते पहिले कार्य के निरन्वयनाश को अंगीकार
करवे से ध्वंसाभाव के दुरनिरूपत्व है २ अना
दि नित्य त्रैकालिक अत्यंताभाव अन्योन्याभा
व के सद्भाव विषे अद्वैत श्रुति साथ विरोध की
प्राप्त होवै है इसी ते एक अत्यंताभाव ही है सो अ
त्यंताभाव द्वि प्रकार का है एक पारमार्थिक ए
क व्यावहारिक पारमार्थिक कहीये नेह ना
नास्ति किंचन इत्यादिक श्रुति कर कै प्रतिपा
दित अनन्य कारण है किंतु प्रवाह रूपेण वर्तते

मेदकात्रप्रभवहै

निरन्वय कहीये न अन्वय सोई है।
नाश है लैसे घट का कपाल होवणा। ना
स है सो एह नास आत्म ज्ञान ते पहि

सूर्य यह चतुरविध अभाव
कार्ड्हं तह तानहीं ॥ ५ ॥
धि
ष्ठित जो प्रपंच को अत्यंताभाव है सो अत्यंता
भाव अधिष्ठानस्वरूप है और केई एक ऐसे
कहते हैं जो अधिष्ठानतें भिन्न है और घटा
दिकों का जो अत्यंताभाव है सो व्यावहारिक
है यह अत्यंताभाव भेद का निरूपक है
भूतलविषे घट नही इत्यादिक प्रतीत का
विषय भेद है और घट नही इत्यादि प्रतीत
का विषय अत्यंताभाव के ही यत है तार्किका
रोने [illegible] आरुनकारने याका दि
सो ने या इक कहते हैं भूतल विषे जो घट
को अत्यंताभाव है सो नित्य है और केई एक
प्रतीतितात्पर्य अन्य जीवेश्वर मे [illegible] रूपचा
सो कहते हैं अरु इस अभाव को नैयायक कुं स दैव [illegible] त कहते हैं ताते
हमो के एह अभेद रूप अभाव अनेगा [illegible] रहै ॥ घट ने [illegible] अत्यंताभाव

[illegible]

३५ त्यंताभाव को नित्य कहते हैं सो तिन सर्वों कों नि
राकर्ण करते है सर्वोपि अनित्य एव काहेते
जो सर्व कहीये भावाभाव रूप के अध्यय ज्ञानक
रके निवर्त्यत्व है अर और कोई एक लौकिक
प्राकृतांतर की बुद्धि को ग्रहण करते हूये अ
भावों के भेद को अंगीकार करते भये हैं अब ति
सी को दिखावे हैं प्रागभाव प्रध्वंसाभाव अ
त्यंताभाव अन्योन्याभाव के भेद ते अभाव
चतुर्विध है उत्पत्ति ते पहिले कारण विषे जो
कार्य को अभाव है सो प्रागभाव है जैसे मृदा
दि विषे घटादि कों का अभाव उत्पत्ति कार्य के
कारण विषे अभाव सो प्रध्वंसाभाव है जैसे

= अर्थयह का रण विषेयह अत्यंताभाव भिन्न होया नित्य रहता है॥ अरु कार्य विषे कार्य भिन्न भिन्न है एह अन्या अन्य अभाव है ५॥१२

मुद्गरआदिकहारतें पीछे कपालादिकवि
षेघटादिकोंकाअभावहै॥अरु प्रतियोगीवि
षेभिन्नताकरकेस्थितजोअभावहैसोअत्यं
ताभावहैजैसेभूतलादिकोंविषेघटादिकों
काअभाव॥अरुप्रतियोगीविषेएकताकरके
अभावहैसोअन्योन्याभावहैजैसेभूतलवि
षेघटकाभेदहै॥सोसर्वअभावअनित्यहीहैइति
अभावप्रमा॥ऐसेषट्विधप्रमाकरकेसाव
र्णअज्ञानदूरहोताहै यहापरोक्षप्रमाक
रकेअसत्वापादिकमोटाअज्ञानकीनिवृ
त्तिहोवेहैअरुअपरोक्षप्रमाकरकेअभानापा
दिककीनिवृत्तिहोतीहै इतिद्वितीयपरिछेदः

२

२६ प्रमातें भिन्न जो ज्ञान है सो अप्रमा है सो द्विविध है
एक स्मृतिरूपा दूसरा अनुभवरूपा ॥ स्मृति कहीये सं
स्कार मात्र जन्य ज्ञाना ॥ सो फेर द्विविध है यथार्थ अय
थार्थ रूप भेद तें यथार्थ स्मृति हूं द्विविध है एक
अनात्म स्मृति रूपा एक आत्म स्मृति रूपा तहां
अनुमान करके यथार्थ अनात्म स्मृति जनावे
हैं व्यावहारिक प्रपंच मिथ्या है दृश्यत्व जडत्व प
रिछिन्नत्व तें शुक्ति रूप्य जेसे इस प्रकार अनुमा
न करके सिद्ध जो मिथ्यात्व को अनुसंधान है सो
यथार्थ अनात्म स्मृति है अरु तत्त्वमस्यादि वा
जो क्या के अर्थ को अनुसंधान है सो यथार्थ आ
त्म स्मृति है अरु अयथार्था स्मृति हूं द्विप्रकार

काहेपूर्ववत्अनात्मआत्मस्मृतिरूपाप्रपंच
केसत्यत्वकाजोअनुसंधानहे सोअयथार्थज्ञा
नात्मस्मृतिहे काहेतैंतिनप्रपंचकेमिथ्यात्वहे
अरअहंकारआदिकोविषेजोआत्माकोअनु
संधानहे अथवाआत्माविषेकरत्वादिकोंका
अनुसंधानहे॥ अरस्वप्नजोहेसोअनुभवरूपहे
स्मृतिनही सोआगेकहेंगे॥ स्मृतितेभिन्नजोज्ञा
नहे सोअनुभवहे सोकूंद्विविधहे एकयथार्थ
हे एकअयथार्थहे॥ यथार्थअनुभवप्रमाहे
सोआगेनिरूपितहे अरबाधितविषयका
जोअनुभवहे सोअयथार्थअनुभवहे सोकूं
संशयअरनिश्चयनेदतेद्विविधहे एकधर्मी

सोअयथार्थ-आत्मस्मरनहे

३५ विषै नाम समान विरुद्ध जो नूंना कोटक ज्ञान है सो
संशय है। अथवा एक धर्मी विषै तिस धर्मी का
प्रकार अप्रतिसत्ते भिन्न जो धर्म है यह जो दो
नों धर्म हैं तिन कूं के नेदका अविगाही जो ज्ञान
* है तिन सा पृथ्अविहूं जाना नाग्पान है सो संशय
है कई एक अपेक्षक हते हैं सो संशय कूं द्विविध है
प्रमाण अप्रमाण्य भेद करके॥ तहां प्रमाणत्व तिजो
असंभावना है सो प्रमाण संशय है सो प्रमाण
के विषयके निष्कर्ते निवर्त होता है सो प्रामाण्य
को निश्चय स्वतः ही है॥ [illegible] प्रामाण्य कही
ये तिस विषै तिसही का निश्चय॥ अरस्य तस्त
कहीये स्वाश्रय ग्राहक करके ग्राह्यत्वा। स्वाश्र

प्रमान्यस्वतःहै अरुअप्रामान्यपरतःहै सोदिखावेहै जैसेस्वात्म[illegible]
विषेपुरुषकाआस्यात्मआइनसंशयतेभीद्वैपूर्ववर्तिप्रामोपुरुषहै सोस्वतःप्र

यकहीयेहत्तिज्ञान तिसकाग्राहककहीयेसा
क्षीचेतन्य तिसकरकेजोविषयकीयथार्थता
हैसोग्रहणकरीयतहै ऐसेस्वतःप्रामान्यसिद्ध
भया॥अरुअप्रामान्यश्रोपरतःहै सोअप्रामा
न्यकहीये तिनकेअभावविषेतिनकाप्रकार
कत्वज्ञान॥ततअभाववानभावकरैहत्तिज्ञान
कारअग्रहणत्वकरके साक्षीकरके ग्रहण
करबेकोअशक्यताकरके अप्रामान्यपरतः
ग्रहणकरीयतहै॥प्रामान्यकेस्वतःस्वरूप
विषेसंशयदोषकेवशतेउत्पत्तिहोताहै इह
प्रमाणगतसंशयहै॥ अद्वितीयब्रह्मविषे
वेदांतप्रमाणहैवानहीं इहप्रमाणगतअसं
भावनाकहीयतहै सोअसंभावनाश्रवणकर

३९ दूरहोतीहै सोश्रवणआगेनिरूपितहै सोश्रव
णकूंआदिलेकेप्रथमअध्यायकेपठनकर
केसिद्धहोताहै॥ प्रमेयगतअसंभावनाद्विविधहैए
कअनात्मगतदूसरीआत्मगत॥ स्थाणुर्वापुरुषोवा
इतिअनात्मगतसंशय॥ अरुआत्मगतसंशयअने
कप्रकारकोहै सोदिखावेहै॥ ब्रह्मअद्वितीहै कैसद्वि
तीहै अद्वितीयसंशयदूसराआनंदगुणकहै वाआनंदस्वरू
पहै इत्यादिकपरमात्मगतसंशयहै॥ आत्मादेहादिको
तेभिन्नहै वानहीभिन्नसंशयकर्ताहै कैअकर्ताहै अक
र्तासंशयचिद्रूपहै कैअचिद्रूपहै चिद्रूपत्वसंशयआ
नंदरूपहै वानहीइत्यादिकजीवगतसंशयहै॥ जीव

केसच्चिद्ज्ञानंद्रूपसंतंतेहु ब्रह्मसाधम्र्यमेरहोता
हैवानहीहोताएकसंतंतेरैकाज्ञानमोक्षकासाधनहै
वानहीमोक्षसाधनसंतंतेहु सोज्ञानकर्मसाध्यमोक्षसा
धनहैवा केवलज्ञानमोक्षकासाधनहै।।ए हुऐकार्व
बेसंशयहै।।यहसर्वसंशयतर्कआत्मकमननकरके
निवर्तहोवेहै।।तर्ककहीयेअनिष्टप्रसंग।।अर्थयहव्या
प्यकेआरोपसाकवैव्यापककारत्सिधकरणा।।व्याप्तिका
जोआश्रयहोसोकहीयेव्याप्यअरव्याप्तिकाजोनिरू
पकहोसोकहीयेव्यापक सोदिखावेहै जेजगपंचस
त्पहोता तोअविद्वितीयश्रुतिपादिककर्तिकाविरो
धहोता अरजेपरमात्माजीवसेभिन्नहोता तद

३९ घटादिकों जैसे अनात्मत्व करके अनित्य होता
जो आत्मा आनंद न होता तद कोई एक व्यापार न
करता इत्यादिक व्याप्य के आरोपण करके व्यापक
का आरोपण रूप वेदो जो तर्क है सो देखबे योग्य
है यह मनन निरूपण कीया सो मननँ द्वारा तर्क न
के द्वितीय अध्याय पठन करके सिद्ध होवे है अ
र संशय का विरोधी रूप जो ज्ञान है सो निश्चय क
हीयत है सो द्विविध है एक यथार्थ एक अयथा
र्थ अविसंवादी यथार्थ निश्चय कहीये सो प्रमाण
कह्यो है और विसंवादी अयथार्थ निश्चय है सो
द्विविध है एक तर्क दूसरा विपर्यय तर्क अप्रमाण
कह्यो है और विपर्यय कहीये मिथ्या ज्ञान अ
र्थ यह अतत् विषे तत् बुद्धि सो द्विविध है एक

निरउपाधिक दूसरो सोपाधि तहां निरउपा
धक द्वि विधहे बाह्य अंतर जेसें मृग विषेर
जित यह बाह्य हे अरमें अज्ञ हो आपको नही
जानो इत्यादिक अन्यांतर है॥ अर सोपाधिक
हें द्वि विध हे बाह्य अन्यंतर रूपतें स्फटक भास
हे अर आकाशादि प्रपंचकें नाम ह्यं वाह्य सोपाधिक
है कर्म अरु अविद्याके कार्य तें तत्वज्ञानी के तत्वज्ञा
नकर के अज्ञान निवृत्ति हैं और सत्य परवे
ते प्रपंचकी उपलब्धिकरनें तें॥ अरु इत्यादि
कनाम आन्यंतर है और सप्रहन सोपाधिक अ
भ्यंतर नामहे स्मृति नही सोइ स्वावें है जागरत भोग

ग्र जो कर्म हैं तिनों के गुणे तिस ते और स्वप्न भोगप्रद

के कर्मो उदे से तिस सकल विषयें इंद्रयादिको कीवास

नाकर वासित निद्रादोष कर के व्याप्त जो अंतःक

रण है सो रूपादि करविषै या कार करके अरु गोर

क इंद्री या द्यकार करके अरु रूपादि कर विषै याकार

जो वृत्त है तिसके आकार कर के परिणाम होता है। अंतः

करण उपहित जो साखी है सो आपअरोर कर के अप्रकाशरूप

सर्वाको प्रकाशक ता है। इसी ते स्वप्न विषे साखी का स्वप्र

काशत्व सुझे यहै। अरु जाग्रतावस्था विषे सूर्यादिकों के प्र

काश करके मिलता ते साखी का स्वप्रकाशत्व उर्झे यहै

अरु स्वप्न विषे सूर्यादि जाग्रत पदार्थो के गुणेते स्वप्रका

शत्व साखी का विवेक करणे ताई गुणकहै।। तहां श्रुतिहै

सोपुरुषजबसेनकर्त्ताहै तदइनलोककीसर्व
वासनाकोलेकरकैआपसंहारकरकेआप
रचकरकेअपनीभासाकहीयेविषयाकार
वृत्तिकरकेअरस्वप्नकाप्रातवकरकेस्वप्नावस्था
वानहोताहै ईहांइहपुरुषस्वयंजोतहोताहै त
हांनरथहै नरथजोगपथहै तोहंरथोंकोरथ
योगपथोंकोरचताहै इत्यादि ताते स्वप्नकाप्राहै
स्वप्नकाप्राकहीयेचैतन्यकाअविषयहै ऐसेस
प्नअनुभवहीहैस्मृतिनहीं जेस्मृतिहोतीतदर
थंपूर्वपामिइनअनुभवसाथविरोधहोता स्वप्नपदा
र्थोंकेअंतस्करणमायाद्वाराशुद्धचैतन्यविषेअ
ध्यासाभावकरके अबजाग्रतकोलविषेतिन
केसाक्षात्कारकेअभावकरकेबाधकेअभाव

४१ संतिहूं सोपाधिकनावकरके उपाधकी निर
तकरके तिसकी निवृत्तिहै इसीतें जाग्रअवस्था
विषे नही अनुवृत्ति तिनकी इहां उपाधकहीये
कर्म अरु निद्रादोषकर के युक्त अंतस्करण॥ अरु
केई एक स्वप्नाध्यासको निरउपाधिक कहते हैं
तहां विरोधी जाग्रत के प्रत्ययुक्त रके स्वप्नाध्यास
की निवृत्तिहै फेर विपर्यय [illegible] द्विविधहै एक अं
तस्करणवृत्ति रूपा दूसरा अविद्यावृत्ति रूपा स्व
प्नादिक अंतस्करणवृत्ति रूपहै अरु रजताद्रि भ्रम
अविद्यावृत्ति रूपहै अरु संशयहूं अविद्यावृत्ति
रूपहै॥ ऐसे संतिनिरउपाधिक विपर्यय निरूर
ध्यासकरके निवृत्ति होताहै अरु सोपाधिकवि

पर्यायउपाधकी निवर्तताकरकै निवृत्तिहोताहै सो निदिध्यासनगणकह्याहै सो निदिध्यासनकूं शारीरककेतृतीयअध्यायकेपादकरसिद्धहो ताहै इसप्रकारश्रवणमनननिदिध्यासनकूंक रके असंभावना विपरीतभावनाकी निवृत्तिहुं ये औरप्रतिबंधन विद्यमानसंतितत्त्वमस्यादि वाक्यतें अहंब्रह्मास्मिऐसे अपरोक्षज्ञानहोवैहै सो कह्याहै सूत्रकारनें आमंतिकप्रतिबंधकेअभावसे तिइहांहीब्रह्मकोसाक्षात्कारहोवैहै सोप्रतिबंध त्रिविधहै भूतभविष्यतवर्तमानकेभेदते सो भूत प्रतिबंधयह पूर्वअनुभूतविषयकाअवरणकर केजोफेरफेरस्मरनहोवै॥ पूर्वानुभूतविषयअपा धिकअर्थके विचारकरकैतिसप्रतिबंधकीनि

४२ वृत्तिहोवैहै जैसेलिङ्लोकके पूर्वजन्ममहि
श्रवणादिकोंके सम्पूर्नकरके तत्त्वज्ञानकी उत्पत्तिहुइसे
त्तिग्रन्थपदिश्रमहिन्रणदिउपाधिकब्रह्मके य
नुसंधानकरके तिसप्रतिबंधकी निवृत्तिहो
तीहै॥ अरचावप्रतिबंधद्विविधहै एकप्रार
ब्धक्षेषहै एकब्रह्मलोककाहै तहांप्रारब्धक
मैद्विविधहै एकफलाभिसंधकृतहै एकके
वलहै सोफलाभिसंधकृतकर्मफलकोदेक
रनाशहोताहै तिसके विद्यमानसंतितिसके
प्रबलत्वकरके ज्ञाननहीहोवैहै तहांकृतिहै
सोजैसीभावनाकर्ताहै तैसीविधहोताहै जै
सीविधिहोताहै तैसाकर्मकरताहै जैसाक

मेंकरताहै तैसाफलपावताहै इति ऐसेप्रार
ब्धभोगमात्रप्रतिबंधहै॥ अरकेवलप्रारब्ध
पापनिवृत्तिद्वाराज्ञानकाहेतुहै तहांश्रुतिस्मृ
तिप्रमाणहै धर्मकरकेपापकोदूरकरेहै इ
तिश्रुतिः॥ अरपुरुषोंकेपापकर्मकेक्षयतें
ज्ञानउत्पत्तिहोवेहै कषायजोदोषहैतिनक
रिकरपरपक्वसंति तिसतेंपीछेज्ञानहोताहै इ
तिस्मृतिः॥ इसप्रकारप्रारब्धशेषजोभावीप्रति
बंधहै तिसकेभोगकरनिवर्तसंतिहू फलपूर्णहि
संतिज्ञानकाउदयहोताहै जैसेकहतेहैं एक
जन्मकरकेवामदेवको अरतीनजन्मकरभ
र्थकोज्ञानभयो॥ ब्रह्मलोककइच्छाकेब्रह्मसमा
लोत्कारउत्पत्तिविषेप्रतिबंधकत्वकोविचार

८३ न्यस्वामी कहतनये है॥ अयेसेलोके ज्ञानलीय
कारसंतितिनिसइछाकेरोककरके आत्माकोजो
विचारकरतेहे तिसके साक्षात्कार नहीं ह्येतो
फेरवेदांतश्रवणादिकको महिमाकरके ब्रह्म
कोंजायकरके निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारक
रताहे॥ तहांश्रुतिहे वेदांतके विज्ञानकरके
निश्चितहे अर्थ जिनोंने अरसंन्यासयोगतें शु
द्धहे अंतःकरण जिनऊके असेजो संन्यासीहें अ
ह्येलोकमें परमांतकालविषे अन्य न्ते साक्षा
त्कारतें मुक्तहोतेहें सकल इति सोपुनः तहां
हीमुक्तहोताहे॥ वर्तमानप्रतिबंधको अरत
मूनिवृत्तिउपायको विद्यारनास्वामी वर्ननक
रनेनयेहें वर्तमानप्रतिबंध विषयासक्तिल

ब्रह्मादिकशांतिकालवेदेश

खंपर्यरविषेबुडाहत ॥ १

लएा अर अज्ञामांद्य कुतर्क विपर्यइ यागहहेने
रोतेचतुविधेहे ॥ यह प्रतिबंधतहां तहां उरचेतजो ग्रमादिक
अथवा अवरणादिक हैते नोकरके हृयको प्राप्तसंते आपके
बलत्वको पावता है ॥ तैसी हे तनेर[illegible] अवरणादिकोकरके
सकलप्रति बंधकी निवृत्तिकरके वाक्यते ब्रह्मसाक्षात्कारकी
उत्पत्ति विषे ग्रामदम उपर्तितति क्षा अथा समाधान यह अंतरंग
साधनहैं ॥ अंतर इंद्रियनिग्रह यह ग्रामहे बाह्य इंद्रयनिग्रह यह
दमहे सन्यासको उपरत कहीये तितिक्षा कहीये द्वंद्व सहणा
तो अथा कहीये गुरुवेदांतवाक्य विषे रने हे ॥ समाधान कही
ये अवरणादिको विषे चेतएकाग्र ॥ तहां श्रुतिहे ग्रांतदांतउ
परततितिक्षुसमाहितहोकर आपविषे आपको देखताहै ॥
रनेकारहकहतभयाग्रामदमादिकोककैयुक्तहोवेतोभी

पुनःपुनःश्रवणादिकरकेकाहेतेंजोतिनोकाकरणासाक्षा
त्कारकाअंगहैतातेंअवश्यकरे।।अरुयज्ञादिकबाह्य
साधनहैं।।तहांश्रुतिहैतिसइसआत्माकोवेदवचनकर
केब्राह्मणजानतेहैंयज्ञतेंपदानेंअरुनाशककरके।।इति।।
तहांसूत्रहहै यज्ञादिककश्रुतिकीजोसर्वअपेक्षाहैसोअ
श्वजैसेयोग्यपराइणहै तैसेहि मननादिकोंफकैप्र
धजोरचितदर्पणहैतिसरचितकरकेसहकृतरविचा
रितजोमहावाक्यहैतिसकरकेउत्पन्नहैअसोजोअहं
ब्रह्मास्मीयहजोअप्रतिबंधसाक्षात्कारहैतिनकरके
अज्ञानरनेवृत्तेसंतिसंरचितकर्मोकेनष्टहुयेतेंअरुभावीकर्म
मोंकेअश्लेषहुयेतेंअरुप्रारब्धकर्मप्राप्तजोविषयहै
तिसकोअनुभवकरताहुयामनुष्यअखंडएकरस

[illegible]
[illegible]

सच्चिदानंद ब्रह्मस्वरूप करकै स्थित होता है एतादृश फल
चतुर्थी ध्यायके पठन करके होवै है यह सांप्रदायी कह
ते है॥ अरु केई एक कहते है जो गुरुमुख पत्ते आरभ्र जो संपू
र्ण शास्त्र को पठन है सो श्रवण है तिस श्रवण का युक्ति
करके जो अनुसंधान है सो मनन है तिसी मननका फेर
वैतत्ता करके जो आवर्तन है सो निदिध्यासन है॥ पीछे साक्षातकार
है॥ वस्तुतें जो शुधस्वंत:करण युक्त मुख्याधिकारी है उ
त्तम है अथवा अच्युत पन हां तिनो के श्लोक करके वा अर्ध
श्लोक करके साक्षात्कार होवै है को है तें जो शब्द अरु चैतन्य शू
न्य है शुद्धि जो शारीरकारक है तिनके मुख्याधिकारी के
विषे की उपपत्ति॥ सो कहा है महाभारत विषे जो पुरुष सर्व
भूतगुहाशय आत्माको जाने है श्लोक करके अथवा अर्ध
श्लोक करके तिसका और शास्त्रों सा प्रयोजन नहीं रहा॥

सांप्रदायोनेभीकहाहैवाक्यश्रवणमात्रकरकैंएपिशाचजैसे
पावैहै॥ईहांइतनाभेदहैजोअव्युत्पन्नोकेपराधीनबुद्धिवंते
असंभावनादिकोकेसंभवतेंध्याननिष्ठाअपेक्षितहै।
सोकहाहैभगवाननेभगवद्गीताविषे॥अन्येत्वेवमजानं
तः श्रुत्वान्येभ्यउपासतेतेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरा
यणाः॥इति॥विद्यारन्योनेभीकहाहैअत्यंतबुधकेमांद्यतें
अथवासामग्रीकेअसंभवतेंजोविचारकोंनहीपावता
सोनिरंतरब्रह्मकोउपासनाकरैमरणविषेभीब्रह्मलोक
विषेतत्वकोजानकेमुक्तहोताहै॥पातंजलनेभीकहाहै
प्रत्यक्चेतनकाअधिगमहोताहैअरअंतरायकाअभावहोताहै
एतेसउपासनातपीहैं॥अरप्रमाणविषेचतुरहैअरसंन्या
यादिकोकरकेग्रस्तहैंएतेनोकेहंध्याननिष्ठाअपेक्षितहै
ऐसेजोपंडितहै

अरु और स्थान विषे हं कहतहै॥ सो कहा है प्रत्यक्ष अरु अ
नुमान कर के ध्यान विषे ब्रह्म साक्षात्कार करना है। और
स्थान विषे हं कहा है बहुत व्याकुल चित्तों की बुध तत्व विचार
विषे जो न होवे तिन इस्तीनो के योग ही मुख्य है काहे ते जो बुधि का
गवे र्त्ति तिस योग करना ही होता है॥ अरु संशया दि रहे तो वे
ध्यान निष्ठ जो होत इस्तीनो के भी सुष प्रत्यक्ष है॥ सो कहा है
अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जना पर्युपासते तेषां नित्याभि
युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहं॥ मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोध
यंतः परस्परं कथयंतश्च मां नित्यं तुष्यंति च रमंति च॥ इति॥
अरु ज्ञानी के ध्यान विधि नहीं काहे ते जो देहाभिमान शून्यता
के कैक तत्व के अभाव कर के तिन ज्ञानी के विधि किं करता को
अयोग्य है। सो इस प्रकार हं कहा है विधि न षेध जो है सो देह के
संबंध ते है अग्नि वत् स्थान मे इति॥ भाष्यकारो ने हं कहा है॥

अर

४६ मैं ब्रह्म हूं इन हीं विषे समाप्त है सकल विधि सर्व शास्त्र वि
धिन बंधमोक्ष पर अवरहे हैं ज्ञा है कोविषे सकल अहं
मम आरमें मान अन्य के प्रमाण तत्त्व की असिधता संतति प्र
मारा प्रवृत्ति की हू असिध है ॥ गैरका रसे प्यात्मा असत
संतति पूर्व देहादिक के बाधसंतति सो सत ब्रह्म में हूं ऐ
से बोधसंतति कर्तव्य कै से है ॥ ज्ञानी के ध्यानी भाव
संतति व्यवहार के बाकुल्यते है एइ दुःख मात्र है मोक्ष
प्रति बंधम तीसो कहा है स्व इकारनें ब्रह्म निष्ठ केगो
रु उपदेश है ब्रह्मविषे अन्य व्यापार शून्यता यारवे
पर्यवसान है ज्ञेसके अर्थ यह ज्ञानैक मूर्ति है ।
ऐसे भगवान हूं कहते हैं ॥ यत्वंवेत्ति पुरुषं गच्छ
तिं च गुणैः सह सर्वथा वर्त्तमानोपि न सभूयोपि

जायते २ यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते हत्वापि स इमांल्लोकान्न हंति न निबध्यते २ ओषवाक्यका है अश्वमेध सहस्र का करताहै अरु ब्रह्मघात लक्षों को करै है परमार्थ वित जो पुरुष है सो पुन्यों अरु पापों करके लिपायमान नहीं होता काहेतें जो निर्मल है अरु विद्यारन्यों ने भी कहा है पूर्ण ज्ञान से तिरसकृत अरु वैराग्य के प्रतिबंध करके मोक्ष तो होवै है परंतु दृष्ट दुःख नाश नहीं होते॥ अरु बोधके पूर्णतत्व की अवधि विष्णुपुराण विषे परमेश्वर जी ने दिखाई है मैं हरि हों अरु सर्व यह जनार्दन है कार्य कारण समूह तिन तें अन्य नहीं ऐसा मन है जिसके तिस पुरुष के जगत विषे न ये जो द्वंद्व है सो न

४०. हैं होते॥ अरु ब्रह्मगीता विषे ब्रह्माप्रति शिवजी ने
हीं कहा है मैं सर्वज्ञ निरूपण अनै रूपण विषे न
हीं कहुं और यही विद्वं की परम आत्म निष्ठा है मुझे
को यह अनुभव असंशय है इति उपदेश सहस्री
विषे आचार्य जी ने भी कहा है देहात्मज्ञानवज्ज्ञा
नं देहात्मज्ञानबाधकं आत्मन्येव भवेद्यस्य
स नेच्छन्नपि मुच्यते १ अयमस्मीति पूरुष इहां
अयं इन पद अनुतिका जो तात्पर्य है तिसको प्रतिपा
न दै की मिस करके विचार न्यों ने हीं तत्वमसी पवि
वे दिखाया है॥ असंशय अरु औ विपरीत जैसे
देहात्मा विषे बोध देषीयत है तैसे आत्मा विषे
निर्नय कर बेताई अयं अस्मि कहीयत है फेर

ऐसेहीयेहस्तामलकहैइनगुणोंसेउत्कर्षकेप्रसिद्धता
कोप्राप्तकरकेस्वस्वरूपकरकेस्थितहोताहैसोउत्तमपुरु
षहीहैतातेंसर्वप्राणियोंमेंश्रवणादिककरकेब्रह्मकासाक्षा
त्कारहोवेहै तिसतेंपीछेब्रह्मभावलक्ष
णमुक्तहोवेहै यहसिद्धांतहै॥ तहांश्रुतिसं
तिप्रमाणहै॥ तमेवविदित्वातिमृत्युमेति। न
इतिश्लोकमात्रविना। ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति।
एवमेवैषसंप्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थायप
रंज्योतिरुपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्य
तेसउत्तमःपुरुषः॥ आत्मानंचेद्विजानी
यादयमस्मीतिपूरुषः किमिच्छन्कस्य
कामायशरीरमनुसंज्वरेदिति॥ यस्यर्णो
नेदेकबोधस्तद्ब्रह्मास्मीतिकृतकृ
त्यान्नवेत्ति॥ एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृत

४८ छत्यक्रमारन हत्यादिकफुतिस्मृति तितें ब्रह्म
ज्ञानबलसे मुक्तिसिद्धहोतीहै नहोइष
जीकहैहैं जैसेचद्रमागतेच्युतपादजोपुरुषहै
सोनचहताहूंयाहूं पृथिवीमेंगिरताहै तैसेप्र २
कृतिपुरुषकाज्ञाताजोपुरुषहै नचहताहू
मुक्तिहोताहै इतितृतीयपरिच्छेदः ३ अबमुक्तको
वर्णनकरतेहैं सोमुक्तद्विविधहै एकविदेहमुक्तहै दूसरी
जीवन्मुक्त॥ तहांतत्वज्ञानीकेभोगकरप्रारब्धकर्म
ति क्षयहुयेंवर्तमानशरीरकोजोपातहैं। विदेहमुक्त
वेहै होसोकहतेहैंस्वकारने। भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासं
पद्यतेइति। भोगकरकेइतरजोपुन्यपापहै तिनोको
क्षयकरकेमुक्तहोवैहै॥ औरविदेहमुक्तकोसंकारकहतेहैं

भावीशरीरकोजोअनारंभहैसोविदेहमुक्तहै॥सा
ज्ञानंसमकालहै॥ज्ञानकरकेअज्ञाननिवृत्तभयेसंतेसंचि
तकर्मकिनाशतेअरुभावीकर्मोंकेअश्लेषतेभोगक
रकेप्रारब्धकर्मकेक्षयतेशरीरांतरकेआरंभकेअ
संभवतेभावीशरीरकेअनारंभकोज्ञानसमकालत्व
बनाहैसोकहाहै॥तीर्थअथवाचंडालगृहविषेनष्टस्मृति
हुए देहकोत्यागकर्ताहुयाकैवल्यकोप्राप्तहोताहैतैंश्लोकहु
या॥जातेज्ञानसमकालमुक्तकह्याहैऐसेवर्णनकर्तेभयेहैं॥
अरुधृतरादिकोकरउत्पन्नहैसोसाक्षात्कारजिसकेऐ
साजोविद्वत्सन्यासीहैतिसकेकर्तृत्वादिकअखिलब
धकेप्रतिभासकीजोनिवृत्तहैसोजीवन्मुक्तहै॥भोगस्सेध
कर्तोप्रारब्धप्रबलसंतेहूंयोगाभ्यासकरकेतिनकेतर

अर्थ यह प्रारब्धतें योगाभ्यास
प्रबल है ॥ २

अर्थ इसका यह होता है काहेतें जो प्रारब्ध की अपेक्षा करके यो
गाभ्यास के प्रबलत्व है। अन्यथा पुरुषप्रयत्न के व्य
र्थता करके चिकितसाशास्त्रतें लेकर मोक्षशास्त्रप
र्यंत शास्त्र का अनादर होवैहै। इसीतें पुरुषप्रयत्न
के साफल्य को श्रीवशिष्ठजी कहते भये हैं। बाल्याव
स्थातें लेकरके अभ्यास कीये हूये जो शास्त्र अरु सत्
संग आदिक हैं इन गुणों करके अरु पुरुषप्रय
त्न करके सो हित रूप अर्थ प्राप्त होता है। तहां श्रु
ति स्मृति इतिहास पुराणों के वचन प्रमाण हैं॥ वि
मुक्तश्च विमुच्यत इति श्रुतिः॥ सुषुप्त विषे स्थित
हूया जो जागता है अरु जिनके जाग्रत नहीं और
जिसका बोध निर्वासन है सो जीवन्मुक्त कहीये

तेहै इतिवसिष्ठवचनम् ॥ प्रजहाति यदा कामान् स
र्वान्पार्थ मनोगतान् आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थित
प्रज्ञस्तदोच्यते १ अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण
एव च निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः मय्य
र्पितमनोबुद्धि र्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ३ इन श्लो
कों विषे जीवन्मुक्ति कहीयत है ॥ प्रकाशं च प्रवृत्तिं
च इन तीनों के करके गुणातीत है सो च योंते इत्यंतग्र
न्थ करके जीवन्मुक्ति दिखाईयत भया ॥ फेर महा
भारत विषे भी कहा है जो निराशी है अरु आरंभ र
हित है अरु निरनमस्कार है अरु स्तुति ते रहित है
अरु क्षीण है अरु क्षीण कर्म है तिसको देवता ब्रा
ह्मण जानते हैं ॥ अरु पुराण विषे भी कहा है जैसे

५· स्वप्नप्रपंचमुजविषेमायाकरकेविलसितहै ऐसे
जाग्रतप्रपंचहूमेरेविषेमायाकरकेविलसितहै
इसप्रकारजोविवेकतोकरकेजानेहै सोअतिवर्णाश्र
मीहोवेहै।सो यहजीवन्मुक्ति तत्वज्ञानमनोनाश
वासनाक्षयके अभ्यासतेसिद्धहोवेहै॥अभ्यासक
हीयेउत्पन्नतत्वज्ञानके वारवार किसीएकउपा
यकरकेतत्वकोजोअनुसंधानहै॥सोकहाहै त
च्चिंतनं तत्कथनं मन्योन्यं तत्प्रबोधनं एतदेक
परत्वंच ब्रह्माभ्यासं विदुर्बुधाइति॥ यद्यपित
त्वज्ञानतेपूर्वहू वासनाक्षयमनोनाशका अभ्या
सवांछितहै तोभी विविदिषासंन्यासीकूसोगौ
णहै तिसकेश्रवणादि अभ्यासही मुख्यहै अ
रविद्वत्संन्यासीके तत्वज्ञानाभ्यासगौणहै वा

सनाह्लाय मनोनाशका अभ्यास प्रधान है इसीतें अविरोध है॥ अरु तत्तोपासन मुख्याधिकारके वास नाल्लय मनोनाश अभ्यासकी अपेक्षाकै अनावसंति है॥ अरु तत्तोपासन अभ्यासिकोंके तिसमनोनासवास नाल्लयकूं अनावसंतिचितविषातके अन्यावसंति उत्पन्न हुए तत्वेज्ञानं आत्मा स्वरूप विषयोंके अबाध तेअरु अभ्यासें भावनादिकोंके अभ्यासें वर्ते सुखकाकर्त्ता नहीं होवे है इसीतें वासनाल्लय मनोनाश अपेक्षित है॥ वासनाको समानलक्षण अरु तिसका विभाग अरु तिसको प्रयोजन अरु तिसके विभूषन सए वसिष्ठ जीने कह्यो है॥ पूर्वापर विचारको त्यागक रिके दृढ भावना करके जो पदार्थका ग्रहण है सो वासना कहाय ते है सो वासना शुद्ध मलिनभेदते द्विविध है मलिन वासना जन्म दाइनी है अरु

५१ शुद्धवासनाजन्मनाशनी है॥ मलिनवासनाजनावे
हैं घनअज्ञानको आकार अरघनअहंकारसायमि
ली अरजन्मरायिनी बुद्धि जनोंने मलिनवासनाकही
है अरजन्मांकुरकोत्यागकरके संचन दग्धबीजकीन्या
ईस्थितहै अरदेहनमितधारीहै अरज्ञाततज्ञेयहै सो
शुद्धकहीयतहै॥ तहां मलिनवासनाजन्मकाहेतअ
नेकप्रकारदिखाईहैं लोकवासनयाजंतो देहवा
सनयापिच शास्त्रवासनयाज्ञानं यथावन्नेवजा
यते॥१॥ दंभोदर्पोभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेवच
अज्ञानंचाभिजातस्य पार्थसंपदमासुरी॥ मिति
स्त्रीपुत्रादिविषयजोमिलतेहैं सोहूमलिनवा
सना कहीयतहै॥ विवेकदोषदर्शनसत्संग

और संबंधत्याग इनप्रति कल वासनायोंके उत्पाद
न करके अंतःकरण विषे प्राप्त जो उत्तम लिन वा
सना है तिनकुं का अनुत्पादन वासनाक्षय अभ्या
स कहीयत है इति तैसे वरष्टा आदिकों देखा है इस
के अभाव ज्ञान करके रागद्वेषादिकों कों क्षीणत्व संतति प्री
तन पूरा है॥ तिनको बोधाभ्यास कहते है॥ विवहारते और
फेर संग और सनते संगके विवहारतें भवभावन के वर्जनितें अर
शरीरके नासवान दृष्टिनतें वासनान हीं उदे होवे है॥ तैसे
कर्म करके तिसका प्रयोजन कोई एक नहीं कर्म किए केहुं प्र
योजन नहीं समाधान जप करके हुं प्रयोजन नहीं जिसका
निर्वासन मन है॥ आत्मा असंग है और अन्य है ते सर्व जगत
इंद्रजाल है ऐसे स्पष्ट तैं निश्चित मन विषे वासना के सहा
बौ जन्म हूं दुःख है जरा हूं दुःखरूप है मृत्यु हूं फिर फिर दुःख
इति वशिष्ठवचनं

रूपहैइहसंसारमंडलहूदुःखरूपहै जिसविषेजीव वडेदुःखीहोतेहैं ऐसेइतहासविषे कहाहै निःसंग ताजोहैसन्यासियोकामुक्तरूपदहैऔरसंगतेसंपूर्ण दोषबद्धहोतेहैं। औरइडयोगहलसंगकारकेऔरथह गोडोतेहैअल्यरसिथकीकथाकहीयेमहरविघ्नुपुरात विषेकहाहै॥ औरश्रीभागवतविषेकहाहै मनुहजो हैमैथुनवर्तीयोंकासंगसर्वथात्यागकरो।सर्वप्रक रडनोकोखैंचीयोविषेनछोडो।एकहीविचरएको तविषे औरनेतकोअंनतईश्वरविषेजोडे औरजोसं गहोतदईश्वरेरतीसाधोविषेहोवै॥इसऔरस्त्री लंपटोकेसंगकोत्यागकरकैइसतेआत्मवानहुयाति मैंयएकोतविषेबैटाहोयानिरालसहोयामेपूर्णचि तैवनाकरे।सहतेसेवासुक्तकाद्वारकहतेहैऔर

खिणीयोंका सन्मान करके हारकहत्ते हे महंत सम चित

वृत्ति क्रोधरहेते सर्व के सुहृद जेसाधुहै। अरखेषी

योकेसंग द्वेषपात्तित्यकहत्ते हे॥ इच्छा जोहे अरस्वर्ग

आमरणं अंबरादिकजोद्रव्यहे सो मायारचेत्तहैं तिनाद्वि

बत्तोमूढ भोग बुधकरके बलात्मेत आत्माहै सोपतंगवत

नष्टहोतीहै जातेनष्टहूएहे॥ अबजतिक लेवासना

जोमैत्रीतेआदिलेकरहैं सो दिखावतहे मैत्रीकरु

णामुदताउपेक्षा यहजोवासनाहे सोसुखदुःख

पापपुण्यविषयाहे तिनकी भावनाकर चित्त

कीप्रसन्नताकरणे अस्याार्थ ... मा सुखी

येविषेयहमेरेहे इसप्रकारभावनाकरताहूआ

अरदुःखीप्राणीयोविषे इनोंके दुःखमतहोइ ऐ

सेभावनाकरताहूआ अरपुण्यीयोंविषेमुदता

५२ कोंनाचनाकरताहूया अरुपापपुंयेंविषेउपेक्षा
कोंनाचनाकरताजोपुरुषहै तिनके रागद्वेषअसू
यामदमात्सर्यादिकोंकी निवृत्तिकरके चित्तप्रसा
दहोवेहै तैसेदैवीसंपदाकेअभ्यासकरकेआ
सुरीसंपदाकानाशहोवेहै सोदैवीसंपदाभगवा
ननेदिखाईहै अभयंसत्वसंशुद्धिः इनतेलेकर
भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत इत्यंतग्रं
थकरके॥ अरुअमानित्व इत्यादिवचनकरके
कहेजोअमानित्वतेंआदिधर्महै तिनहुकेअभ्या
सकरकेतिनतेविपरीतमानादिकनाशहोवै
है तैसेमैत्रीआदिकवासनाकोंअभ्यासकरके
पीछेअजिह्वत्वादिकधर्मोंकोअभ्यासकरसो
अजिह्वादिकदिखावेहैं अजिह्व षंढ पंगु

श्रीगीताटीका

अंध बधिर मुग्ध इनषटोंकरसंन्यासीम
को होता है अब इनको लक्षण कहते हैं॥
यह मिष्ट है यह कटु कहे ऐसे नो गताहूवा
जो नही लिप्त होता अरजो हित सत्य स्वल्पको
बोलैहै सो अजिह्व है॥ एक दिवसकी कंन्य
का षोडशवर्षानारि शतवर्षी सम है गने स्वं
फकता हि विचार॥ निद्रा अर्थ विट मूत्रकोजा
तनओरेकाज जोजनतें बढ़ुनो चले पगुजान
यह साज॥ बैठत कूगत चलतपुनहि दृष्टजाहि
कीदूर तजनासाग नजात है अंधवही नरसूर
॥हितैअरअहित मनोरम अरन्योकदातावा
चनकों सुनताहूया जो नहीं सुनता सो बधिरक

५५ हीयतहै॥ विषयोंके सानिध्य विषै सामर्थ्य
अरु अविकल इंद्रियजो सुषुप्तिजैसे वर्त्तताहै
सो असंन्यासी मुग्धकाहीयतहै इति॥ तिनतैं
पीछे चिन्मात्रवासनाको अभ्यासकरै॥ ना
मरूपात्मकाजगतके चैतन्य विषै कल्पितत्व
करके अरु स्वतः सत्ताशून्यता करके चैतन्य
सत्तास्फुरणपूर्वकजो स्फुरणहोवेहै तिनजग
तविषै नामरूपोंकों मिथ्यात्वके निश्चैकरके
उपेक्षाकरके चिन्मात्रोहं ऐसेभावनाकरै
सो यह चिन्मात्रवासना द्विविधहै॥ एककरलोकर्म
करणकेअनुसंधानपूर्वकहै दूसर केवल
है॥ तहां सकलजगतको चिन्मात्रमनन करके

भावनाकरताहूं ऐसेकरीदृढनिश्चयमाहै सोय
हसंप्रज्ञातसमाधिकोटिविषै अंतरभावकोपा
वताहै॥ अरकर्त्तृकभेदकरणानुसंधानरहित
चिन्मात्रहूंमें ऐसेभावनाकेवलाकहीयोग्य
रसर्वकाचिन्मात्रत्वमुक्तनेबलगत्तिउपदिष्ट
है॥ चिदिहास्तीहचिन्मात्रं सर्वंचिन्मयमेवत
तू चित्वं चिदहमेवेति लोकश्चिदिति संग्रहः।
यिहकेवला असंप्रज्ञातकोटिविषे अंतर्भा
वकोपावताहै तिसचिन्मात्रवासनादृढ
अभ्याससंतिपूर्वोक्तमलिनवासनासक
लक्षीणहोवेहै यिहवासनाक्षयकोअभ्यास
है॥ जततस्वरागिविकोजैसेसावयवकाभारहेवरतेकरकेप
रिणामकोपावताजोअंतःकरणहैसोमननरूपकोमनक

होयत है। सो त्रिगुणात्मक हैं तिसके आश्रय कर के शरी
र और स्त्रीको रसुख दुःख भोग होय है कहे है तिनोकी प्राप्ति तो
रजो नमो वर्तती योकर पुरुष कु यह व्यक्त स्त्रीकर आत्म हु संबंध के
आश्रय होता है इस ते आत्म दर्शन ही यो न्यार्थ वृत्ति निरोध
करके सन्नताका साधक मनोना सम्यक ही के कहे यत है।।
इतिमनके नास के साधन दिखावते है अथ आसन विद्या की
६ आस्थ संगम वा संयम त्याग प्राणस्पंद निरोध एह
युक्ति पुष्ट है ई चित्त के जय रखि ये होती है। प्राणस्पंद रोके
धके उपायको कहते हैं। प्राणायाम के धइ अभ्यास ते
क्रमस्त युक्त कर के आसन अरु भुजन के योग कर
के प्राणस्पंद रोकीयत है। प्राणायाम प्रकार कहा है।।
२७ पा वि ब सो उ आ भि प वनं च तु क त्र ष ठ इ क मो द रि कं स
ज पिंगल या ज्ञान के च्या न के ई दरा भि ई द्या भि ई दशे भि ई धि के।।१।।

अर्थयहवामनासिकाकरकेभ्रौडसकरकेपूरे अरपीछें
चतुरस्वरूपकके कुंभककरे अरपीछेपिंगलाकरकेरेची
सकरकेछोडो॥ अरप्राणायामसनोभासकाउपायश्रुति
विषयंकहाहै॥ प्राणकोप्रतीरउतकरकेसुयुकचेष्टकयाहरी
तप्राणायामसंततिनासकाकरकेधारे उष्टअपवयुसूरणूको
जैसें विद्वानसनेमनकोसावधानहुयाधारे॥ आसनकेस
हेवकरनको अनंतसाधनको अरततफलकोपा
तेजलजीसच्चकरकेकहेहैं॥ तहां स्थिरसुखआ
सनकोकरप्रयत्नशैथिल्य अर अनंतकी समाप
त्तिकरके तिनतेंपीछेंहृदकाअनुसंधानहोयसोहे
प्रयत्नशैथिल्यकहायैलौकिकवैदिककर्मत्या
ग अर अनंतसमापत्तिकुहीये जोमहत्तफल
करकेपृथिवीकोधारताजोशेषहेसोमेंहों ऐसें

५६ सोजोअनुसंधानहै सोअनंतसमापत्तिकहीये इससधारणाकरकै आसनप्रतिबंधकजोदुःख है सोक्षीणहोताहै सोआसनअभ्यासकाफल है ह्वानचिषधात्मकहीयेद्वंद्वकीनिवृत्तिहोतीहै ॥अवप्राणायामकहै श्वास प्रश्वासकी गति का विच्छेद है सोप्राणायाम है ऐसे प्राणायामादिकरकेप्राणस्पंदनिरुद्धसतिअखिलचित्तवृत्तिनिरुद्धहोतहै काहेतेजोचित्तवृत्तिका उदयप्राणस्पंदकेअधीनहै॥तिसतेपरिस्फुरावते आत्मा अनात्माकारजोअज्ञानकार्य है सोअनात्माकारवृत्तिकेनिरोधतेआत्मेकाकारहोवैहै॥जैसेकहाहै आत्मानात्माकारं

स्वभावतोवस्थितंसदाचित्तं आत्मैकाका
रतयातिस्फुरतानात्मदृष्टिरविछत्तये
होयोगहै जैसेकहतेहै चित्तवृत्तिनिरोध
कानामयोगहै॥ तिसवृत्तिनिरोधकासाध
नकूं कहतेहैं अभ्यासअरयोगकरकेंह
मकोनिरोधहोताहै सोभगवान्हूंकहाहै
असंशयंमहाबाहोमनोदुर्निग्रहंचलं
अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते
१ सोवैराग्यआगेकह्योहै अरनिरोधद्वि
विधहैसंप्रज्ञातअसंप्रज्ञातकेभेदतेंन
होकर्त्तृआदिककेअनुसंधानविनाचि

५८ मात्रलक्ष्येकगोचरजोप्रत्ययप्रवाहहै सोसं
प्रज्ञातसमाधहै जैसेकहतेहैं जिसजिसप्र
कारकार्यकीउत्पत्तिहै तिसतिसप्रकारक्रम
करकेलयकोकरके परशिष्टजोसंस्कारवि
मात्रहै तिसीकोचिंतवनाकरे॥ अहंकारविना
ध्येयाकारजोमनोवृत्तिकोप्रवाहहै सोध्यान
अभ्यासकेप्रकर्षतेसंप्रज्ञातहोतीहै॥ इसयो
गीसंप्रज्ञातसमाधकेयमादिकअष्टअंग
हैं यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहा
र यहपंच [illegible] बाह्यांगहै॥ अहिंसा सत्य
अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहयमहै अ
ष्टप्रकारमैथुनकात्यागब्रह्मचर्यहै सोहा

नारीस्त्रिमरनपञ्चवरणपुनदृष्टस्तुभाषणादिहोइ, गुह्यवारताहास्यरतिबहुरस्यरसेकोइ ॥ इ-
नतेजोविपरीतहेसोब्रह्मचर्यमुमुक्षुजनोंने
सेइवअनुष्टेयहे॥सोईब्रह्मचर्यसेंतसंगसंच
यत्यागअरदोषदृष्टीनतहोवेहे॥इसीतेस्त्रियों
केसंभाषणादिकोंकेनिषेधकूंमुमुक्षुजनोंके
कहाहे॥किसीएकस्त्रीसाथसंभाषणकूंनकरे
अरूपूर्वदृष्टकोंस्मरनेकूंनकरेअरतिनोंकी
वार्ताकूंनकरेअरतिनोंकेचित्रकूंनदेखे
क्योंचसंतोषतपस्वाध्यायईश्वरोपासनयहपंचने
महे॥आसनआगेंनिरूपितहे॥सोआसनपद्मस्व

स्तकमैं इक रबकुतप्रकार है॥ रेचकपूरककुंभक प्राणायाम है॥ इंद्रीकारवेषीयोंते निवर्तन प्रत्याहार है॥ येह बाह्य अंग जो है ते संप्रज्ञात समाधि के अंतरंग साधन है॥ धारणा ध्यान समाधि येह संप्रज्ञात समाधि के अंतरंग साधन है॥ धारणा नाम मूलाधारम णपूर्क स्वाधिष्ठान अनाहत आज्ञा विशुद्ध इन्हों चक्रों में वा किसी विषय वा प्रत्यगात्मा विषे जो चित्त का धारणा है सो धारणा कही है अर्थात् हलो लैन ही का एक स्मरण॥ ध्यान कहीये प्रत्यगात्मा विषे बुधकी वृत्ति की एकतानता॥ अर्थात् लहरै के गोचर जो बुध वृत्ति का प्रवाह॥ सो प्रत्यय प्रवाह रहित वेषे है विजातीय प्रत्ययों कर के

ऐक

यों के अंतरात

युक्त अरु दूसरा रहे जो ग्रघ त्यो कर रहित आद्य
ध्यान है दूसरी समाधि है सो समाधि द्विविध है सवि
कल्प अरु निर्विकल्प के भेद सों॥ कर्त्तव्य आदि अनुसंधान
सहित सविकल्प है अरु इनते रहित निर्विकल्प है आ
ठ अंग है उतीय अंग है संप्रज्ञात समाधि के उदेस ते
लै विक्षेप कषाय रसस्वाद ए च्यार विघ्न होवे है ते
कहीये निद्रा कै रखैरवेचवीयो का अनुसंधान रवेढुप है
चितका जो रागादि को करस घहोवना सो कहीये क
षाय॥ अरु समाधि आरंभ समे रवे बजो सविकल्प क
६ आनंद का जो स्वाद है सो रसस्वाद है॥ जैसे कहते हैं ते
रवे बरवे चेतको जगावे प्राणायामादिको करवेको॥ अर

खेद से चित को दोषदर्सन अभ्यास अनुसंधानादि
क करके चित को शांत करे॥ सकषाइ को जाने
अर्थ यह सम प्राप्त को न चलावे॥ अरु समाधि
मे सुख के स्वाद को न लेवे अर्थ यह उदासीन ह
या प्रज्ञायुक्त होवै इति॥ इसी प्रकार निर्विच
संप्रज्ञात समाधि अभ्यास करके अध्यात्म प्रसाद
को प्राप्त जो मन है तिस विषे रितंभरा बुधि का उद
होता है॥ रितंभरा बुधि कहीये अतीत अनागत रित
भी स्थापन विवधान सहित सुक्ष्म वस्तु का ग्रहण त्व
होवता योग के॥ तिस रितंभरा बुधि को इस रोक क
रके समाधि को अभ्यास करते पुरुष के गुणाथे अप
पम विराग उदय होता है सो आगे निरुपित है॥ इति

हे ब्रह्मध्यान कहीये उपासना

तैंपीछें अंगीको अभ्यासकरे उत्साहकरके जो यत्नहै
सो अभ्यासहै जैसे कहाहै समाधस्थिति विषे जो यत्नहै
सो अभ्यासहै तिसके द्वे निरोधसंतिसंपूर्णबुद्धिका
निरोधहोताहै येही है असंप्रज्ञातसमाधहै॥ सोयह
असंप्रज्ञातसमाध केवलपरवैराग्यतें नहीहोता
किंतु ईश्वरप्रणिधानतें हू होताहै जैसे कहाहै ईश्व
रप्रणिधानाद्वा॥ ईश्वरकहीये जो क्लेशकर्म अरु फ
ल अरु आशयतें रहितपुरुषविशेष॥ तिसकावाचक
प्रणवहै॥ तिसकाजप अरु तदर्थभावन इति अर्थ
यह ईश्वरके प्रणिधानतें समाधलाभहोताहै॥ क्ले
शआदिकोंके संबंधतें रहित सर्वज्ञ सर्वशक्ति ईश्व
रकहीये॥ ईश्वरका अभिधायक शब्द प्रणवहै॥ ति
सकाजपकहीये मांडूक्यउपनिषतविषे जो पंचीक
रणहै॥ अरु मांडूक्यउपनिषतके वर्तिकारकरकोउ

८० ऋजोप्रकारहे तिसकरकेजोप्रणवके अर्थका
अनुसंधानहे सोईश्वरप्रणिधानहे॥ अथवा सो
जोहे सो यहमैंहों अरजो यहमैंहों यह सोहे इहांस
ब्दकरके परमात्माकहीयतहे अरु अहंशब्दकार
के प्रत्यगात्माकहीयतहे॥ इनदुवोंके समानाधिकर
णपनेंतें ब्रह्मात्मैक्य कहीयतहे तिनतें पीछें सोहं इनद्व
न्द्वकापरमात्मा अहं जैसे यह अर्थहे तेसप्रणवका
हूहे अबतिसको दिखावेहें॥ सोहं इहां सकार हकार
र इनदुकेलोपकीये संति उं जो परशेषहे इनदों
नोंकेसंधिकोंकरकेउच्चारणविषेंउंऐसा शब्दसि
द्धहोताहे सोकहाहे सकार अरु हकारकोलोप
करकें संधिकोंजोर तिनतें प्रणवहोताहे तिनतेंइ
नद्वन्द्वकापरमात्मा अहं है यह अर्थहे तातें सर्वथा
हू प्रणवजपरूप अरप्रणवका अर्थअनुसंधानहे

पा० १ ॥३

सोधकरण

पओ ईश्वरको प्रणिधानहै तिसकरकेईश्वरकेअ २
नुग्रहतेसमाधकोलाभहोताहीहै ॥ ऐसेसमाधि
केअभ्यासकरकेअंतःकरणकीअतिसूक्ष्मताको
प्रापतिनरूपमनोनाशऐसेकहीयतहै इनसूक्ष्म
मनकरकेतत्वपदलक्षसाक्षात्कारकीयेसंतिमहा
वाक्यकरकेतिसपुरुषकेब्रह्मसाक्षात्कारहोताहै
नकेवलसमाधिकरकेब्रह्मसाक्षात्कारहोताहै किं
तु विवेककरकेभीहोताहै ॥ अंतःकरणऔरतद्वृ
त्तीयोंकाप्रकाशकचिदात्माजोसाक्षीहै तिस
साक्षात्कारकीयेसंतिवाक्यतेसाक्षात्कारहोवेहीं
है सोकहाहै द्वौक्रमौचित्तनाशस्य योगोज्ञानंचरा
रो घव योगोवृत्तिनिरोधोहि ज्ञानंसम्यगवेक्षणं । असा
सा ध्यःकस्यचिद्योगः कस्यचिज्ज्ञाननिश्चयः प्रकारोद्वौ
ततोदेवोजगादपरमेश्वर इति ज्ञानकहीयेविवे
केहतभयाहै

६१ कसोत्तीयअध्याइविवेइज्ञारीपर्वतियाउइन
तेलेकरकामरूपंडुरासदइत्यंतमंषकरकेवि
वेककोअरबेट्अध्यायरबेषयोगको॥ यत्सा
ख्येप्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते इत्यादिक
करकेदेवसर्वज्ञपरमेश्वरभगवानहोगकारक
हांनेयेयह श्लोकको अर्थहै तेसेहीतत्वज्ञानम
नोनाशवासनाक्षयके अभ्यासतें जीवन्मुक्तिसिद्ध
होवेहै।जीवन्मुक्तिके पंचप्रयोजनहैं ज्ञानरक्षा
तप विसंवादाभावदुःखनिवृत्ति सुखआविर्भा
व॥ तहांउत्पन्नहैअपरोक्षसाक्षात्कारजेसयके तिसपुरुषके
संशयविपर्ययैकाजोनरभेध होवेताहैसोज्ञानरक्षाहै
सोदिखावेहै श्रुतिराघवरनेसप्तौरदेखेज्ञानीहैरतेनो
केजैसेअरहतोपरलाअसमरादिफज्ञानीकेरचितरचेप्रात

कर्म भावर्त्तें केरकहारचित्तसंशयरविपर्ययहोत्तहै
अज्ञानजोसंवेहंमोहृत्पन्नबंधकहैसोभगवानकर
तमयहै॥अहंक्त्वा अधानप्रसंज्ञयात्मारवेन
श्रेयत्तेति रत्तिनत्तजीवन्मुक्तअभ्यासकरकेसंभा
रवितसंशयविपर्ययकोरनेवर्त्तेहोतीहैयेहज्ञा
नरूपतपप्रयोजनहै॥तपकहायेरचित्तकीए
काग्रता सोकह्योहै मनकाञ्चइंद्रीनोकाएकाग्र
परमंतपहैसोश्रेष्ठहैसर्वधर्मेति॥सोधर्मपर्मक
हावत्तहैअैसरुपतत्तें यानाजीवन्मुक्तकेसर्वचि
तवत्तीयोकेअनुहोतेंनिरुंधुशचित्तएकाग्रनसिध
होवैहै॥सोयहतपलोकसंग्रहनाईहोताहैसोकह्यो
है लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमरहतीति

संग्राहिलो करत्रिविधहै रु शिष्य भक्त तारस्याभेद
करके तहां सन्मार्गवर्ती शिष्य कहीये सो गुरु उप
देशित मार्गका वैराग्यादिक करके अभ्यास साक्षात
कर्त्ता होयातुं मुक्त होता है। तहां श्रुतिहूं कहती है आ
चार्यवान पुरुष जानता है रु तिसके तोलंहूं चिरहै
जौलूं मुक्त नहीं होवै है इन तेपाछे रु सिद्ध होता है इत्ति १
और भक्त हूं ज्ञानीके अन्नपानादिक अरु पूजा
करके अभीष्टको प्राप्त होता है। तैसे श्रुतिहूं कह
ती है विशुद्धसत्व ज्ञानवान पुरुष रु जिस जिस लो
कको मन करके भावना कर्त्ता है अरु जिस जिस
कामनाको चहता है तिस तिस लोक अरु तिस तिस
कामनाको जीतता है। तिसतें आत्मज्ञ पुरुषकों

पूजा करे विन तें याम पुरुष स्मृति हूं कहत है जो
ते एक अलवित पुरुष भोजन करता है सो संपूर्न
जगत को तृप्त करता है तातें अन्नवेत्ता ताइ दैवे जो
ग्य है जाको ई वस्तु है अरु रत्न स्थ हि विद्व है एसैं सन्मा
गे वरती अरु स्वकाय असन्मार्ग वरती तहां सन्मार्ग व
रती मानें पुरुष को सदाचार प्रवृत्ति को देष कर के
आपहूं तहां प्रवृत्ति होता है सो भगवान कहत हैं य
द्यदाचरते श्रेष्ठ तत्तदेवेतरो जनः स यत्प्रमाणं कु
रुते लोकस्तदनुवर्तते १ अरु असन्मार्गवरती जो
वन्मुक्ति को ह स्थान करके सर्वपापों तें मुक्ति होता
है तैसे स्मृति हूं कहत है जिस पुरुष की बुद्धि अ
त न वडयंतत तत्व विषे प्रवृत्ति होत है तिस पुरुष की

क

९२ द्विषका विषय सर्वपापोंतें मुक्ति होते हैं अरु द्वेषी
ज्ञानवानके संभावित दुःकृतिकों ग्रहण करते हैं
तहां श्रुति कहती है तिस ज्ञानवानके पुत्र जो हैं सो
दायकोंलेते हैं अरु सुहृद पुण्यकृतकों ग्रहण क
रते हैं अरु द्वेषी पापकृत्यकों ग्रहण करते हैं इ
ति ऐसे जीवन्मुक्तिको तपलोकसंग्रहताई हो
ताहै यस्तनपनाभि दूसरा प्रयोजन है २ जीवन्मु
क्तिके वुत्थानदशाविषे कर्मविषे श्रद्धा करके
निरंतर निंदादिकके श्रवणसें तितू अरु पाखं
डी क्रूर निष्ठुरादिकोंके दर्शनसें तिनकूं वितरतिके
अनुदयतें विसंवादकहीये विवाद नहीं होवे है
तहां कहते हैं धारणा करके सदैव तत्त्वनिष्ठोंकों

तथाचश्रुतिः आत्मानंचेद्विजानीयादित्यादिश्रुतिकरकेजीवन्मुक्तकोदुःखनिवृत्तिकादि खावनेते

हमअनुमोदनकरतेहैं औरोकोंशोककरतेहैं
औरजोंतोंसाथविवादनहीकरते यहविसंवा
दाभावनामततीयप्रयोजनहे ३ औरदुःखनिवृ
त्तिविधहै ऐहिकआमुष्मिकतेदोनें तहांज्ञान
करकेजोतनिवृत्तिताकरके औरयोगाभ्यासक
रकेअखिलवृत्तिकाजोनिरोधहै तिसकरकै
चित्तकीआत्मेकाकारताकरकेप्रारब्धभोग
विद्यमानसंतेहूं ऐहिकसमस्तदुःखकीनि
वृत्तिहोतीहै औरज्ञानकरकेजोअज्ञानकी
निवृत्तिहै तिसकरकेसंचितआगामीकर्मो
केविनाशद्वाराजन्मप्रमेचकरकेआमुष्मिक
दुःखोकीहूंनिवृत्तिहोतीहै तैसश्रुतिहूंकह
तीहै॥ तरतिशोकमात्मवित्‌ज्ञानवानतापकोनहीपावतोजो

६४ मैंकौं न पुण्य न कर्त्तव्य अरु कौं न पाप मैं कर्त्तव्य
इत्यादि यह दुःखनिवृत्ति नाम चतुर्थ प्रयोजन है ४
मुक्तिके ज्ञान अरु योग करके अज्ञान अरु तत्त्व
तत् आवरण विक्षेप की निवृत्ति करके बाधक के अ
भाव तें पर पूर्ण ब्रह्मानंद के अनुभव के सुख को
आविरभाव होता है तिसी अर्थको श्रुति दिखा
वै है समाधि करके निरधूत है मल जिसका ऐसा
आत्मा विषे निवेशित है ऐसे चित्त के जो सुख
होवै है सो वाणी करके वर्णन करने को अशक्य
है सो सुख आपही अंतःकरणे ग्रहण करीयत
है यह सुखाविरभाव नाम पंचम प्रयोजन है
५ इस प्रकार स्वरूप प्रमाण साधन फल इन
उके निरूपण करके द्विधा मुक्ति निरूपण

करीहै तातें ब्रह्मवित जीवन्मुक्ति भोगकर केप्रा
रब्धकर्मके लीए संते अरु वर्तमान शरीरकेपा
तसंते अरु संस्कार एकरसब्रह्मानंदकरके स्थित
होताहै तहां श्रुति अरु स्मृति प्रमाणहै तहां ति
सकेप्राण ऊहैं लोकोंकोंजाते इहांहीब्रह्मविषे
लयकोपावतेहैं॥ ब्रह्महूयाब्रह्मकोपावताहै
॥ब्रह्मवितब्रह्महीहोताहै॥ विछेद जनक अज्ञा
न अत्यंत नाश संतें आत्माका ब्रह्मतें अविद्य
मानजो भेदहै तिसकूंकोनकरेगा॥ तिसीहेततें
ज्ञानवान ब्रह्मभावके भावको प्राप्तहूयापर
मात्मातें अभेदहोवैहै॥ अरु तिसकाभेद अज्ञा
नकृतही होताहै इति॥ भगवानस्मनकारहूं कह
ताहै॥ असिंमि अस्य पचनद्यो गंज्ञास्ती ति॥ अर्थयाह

६५ अधिकारीअरसंबंधइनताथकोंताडनाकरताहै
तातेमैंब्रह्महों ऐसेतत्त्वमस्यादिवाक्यज्ञानतेंब्रह्म
भावलक्षणमोक्षहोताहै इतिसिद्धं ऐसाज्ञानवा
नफेरसंसारविषेनहीआवेहै॥ तद्बुद्धयस्तदात्मानः
स्तन्निष्ठास्तत्परायणाः गच्छंत्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननि
र्धूतकल्मषाः। इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंतेब्रह्म
भावमोक्षहोताहै॥ श्रीमत्स्वयं प्रकाशमजं क
करणं ब्रह्म उपदिष्टं परात्मैक्यतत्त्वमावेदितं मया।
ब्रह्मेशविष्ण्वादिसमस्तदेवाः स्वस्वाधिकारेषु विनि
तचित्ताः आज्ञावशाद्यस्य बसंतिसद्वैतं क्षमा
यापुरुषं प्रपद्ये २ अरतिसवाग्वादनीदेवी
कौंमैंप्रणामकरोहों जोसरस्वती शिवविरंच
विष्णुदेवादिकोंकरके नित्यउपास्यमानहै

अरसेहै व अहम भाला कारके विलसते हैं कराय
जिसको॥ आकाशपुष्यजेसे इन विश्वको देखक
रके नित्यसुख बोध रस अमृता ब्धि विषे मग्नहो
अरअद्वै अंतसुखके बोधजो प्रत्यगात्मा है तिस
कों गुरुपद भावना करके भालाकरो हो ४ जि
नगुरोंके युगल चर्नकमलके आश्रय बिना संसा
रसमुद्र विषे गिरयाहूया सुखदुःखनागीनयाहे
पर जिसके पाद पद्मयुगलके आश्रयतें संसारस
मुद्रतरीयत नया तिसउपदेष्टागुरुके चर्नकम
लकों नित्य प्रणाम करो हो ५ परमसुखसमुद्र वि
षे मग्नचित्त हूया महेशजो है हरिजो है ब्रह्म अर
मुख्यजो देवताहैं अरदेह मानेजो गुरु हैं अरज
गतजो है तिनको हूं नहीं जानों केसा है मैं पूरण

९९ सच्चिदानंदहे वपुनिसका सर्वसंसारकल्पना
आत्मा अहमस्मि ६ यदि कुल विषे क्षेर नहि
जैसे हरमकों अरु औरु देवतों कों अरु मनुज
पशु मृगादिकोंकों अरु ब्राह्मणादिकोंकों नही
जानों जाते परमसुख समुद्र विषे मज्जन तें
तन्मय हो इसी तें गलित हो निर्विकल्प नेइ जिसके
जैसा हो अरु सत्य बोध के स्वरूप हो॥ इति श्रीम
त परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वयंप्रकाशा
नंद सरस्वती पूज्यपाद शिष्य भगवन्महादेव स
रस्वती मुनि विरचितं तत्वानुसंधानमु रमती
मत्राही ५ १८८९ जन्माष्टमी के दिन यह ग्रंथ सिद्ध
भयो

कै ?

अरउपाधि

अविछेदकहायेसंबध १ अरवेछेद्यकहाये
संबधी अर्थयहआत्माकेंहें उपाधका नाममी
होजाता है ॥ २ ॥ अरवेछेदकक हायेउपाधि
कहें आत्माका नाम भी होजाता है ॥ ३ अवि
छेदभी संबधीको कहते है

१ अस्थमांसनाडीतुचापंचम रोमप छ्यान १
रेतरपित्तअरस्वेदपुनलालारक्तविचारर
क्षुधात्रषानिद्रालसकांत ३ धावनपसरन
उछलन चंचलअरसंकोच ४ कामक्रोधलोभ
मोहसुन ॥ पंचमभयहैतेसपुन ५

बेरीया॥लाचीरनि क्यांमासे २ कचूरमासे २
पत्रमारकदेसावेमासे २ रनिमृ(देपत्र)मासे४ कबाबा
मासे २ ॥ हारसंघंजघोटकररटेकां ३जोडक
र तेलपाहिकेदे खिचसारन्यांरपवी तेलकुं बा
ण करमासे २ नासदेचणी ॥ तेलकोडाघाला
खिच घत्तेणगकर छुहांडेदी खिचरगाउटा
पहिलूंपउवालपटकरउतेतेललावणा

२) कगणदारवघोदास नालकारनोगुदेते





